卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐

श्री दशलक्षण धर्म विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

Website : www.jainswastisandesh.com

Link to Facebook : swastibhushanmataji

कृति	**:**	**श्री दशलक्षण धर्म विधान**
नवम् संस्करण	**:**	**2100 प्रतियाँ**
प्रकाशन वर्ष	**:**	**2024**
न्यौछावर राशि	**:**	**50.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)**
प्रकाशक	**:**	**श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.) की नव गठित कार्यकारिणी

संरक्षक - स्वराज जैन (फरीदाबाद)

अध्यक्ष - शीतल प्रसाद जैन (रोहिणी, दिल्ली) ✻ **उपाध्यक्ष - नरेश जैन** (पेपर वाले, दिल्ली)

महामंत्री - राकेश जैन (कलकते वाले, दिल्ली) ✻ **मंत्री - उमेश जैन** (रामनगर, दिल्ली)

कोषाध्यक्ष - पंकज जैन (सूर्यनगर, गाजियाबाद)

कार्यकारणी सदस्य - टी. सी. जैन (रोहिणी, दिल्ली) **कोमल जैन** (रामनगर, शाहदरा, दिल्ली)

प्रचार प्रसार संयोजक : राहुल जैन (दिल्ली)

संगठन मंत्री - ब्र. मनीष भैया (संघस्थ) **ब्र. प्रियंका दीदी** (संघस्थ) **मनीष जैन** (करेली)

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

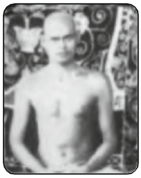

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

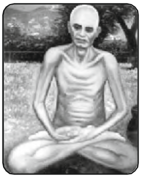

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

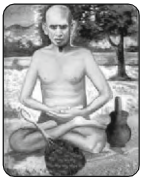

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

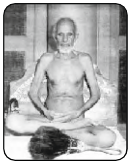

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

प्रस्तावना

भगवान की भक्ति और धर्म की शरण, जीवन के ऐसे सोपान हैं जो भक्त को आत्म विशुद्धि की प्रशस्त प्रेरणा देते हैं। भावों की अविरल गंगा में, भक्ति की उत्ताल तरंगों से जब भक्त अपने को अवगाहित करता है, उस क्षण प्राप्त आनन्द की महक कुछ अनन्य और विशिष्ट होती है। पूज्य आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माताजी की भाव-प्रवणता ने, अनेक महामण्डल विधानों और पूजाओं का प्रणयन करके, भक्ति का एक अलौकिक संसार रच दिया है जिसमें तन्मय होकर भक्तजन अपने संचित कर्मों की निर्जरा कर आत्म कल्याण का सोपान रचते हैं।

लगभग ऐसे 48 विधानों की श्रेष्ठ प्रस्तुति में, समालोच्य विधान कृति 'दशलक्षण धर्म विधान' माताजी की नये वर्ष 2005 के अभिनन्दन में एक प्रेरणादायी आराधना स्वरूप काव्य कृति है।

उत्तम धर्म आत्मा को संचित दुष्कर्मों से उपरत करके, सच्चे सुख में प्रतिष्ठित करता है। धर्म के दस स्वरूप-उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, अकिंचन और ब्रह्मचर्य, आत्म स्वरूप की अपनी निश्चय रूप परिणति पर स्वभाव हैं, जिसके विस्मरण के कारण जीवात्मा, भव-भव के दु:खों का भोक्ता बना हुआ है। दशलक्षण धर्म विधान-की रचना इसी उद्देश्य से की गयी है कि आराधक अपने निसर्गज मूल स्वभाव को याद करके, उन गुणों की प्राप्ति के लिए व्रताचरण रूप पुरुषार्थ करे। प्रस्तुत विधान की दस पूजाएं क्रमश: प्रत्येक धर्म की व्याख्या और उनकी जयमाला-उन धर्मों के गुण-स्तवन रूप वर्णित हैं। क्योंकि धर्म के अनुशीलन के बिना इस जीव की मुक्ति संभव नहीं है। लिखा है-

उत्तम धरम संसार में, जीवों का ही आधार है।
निश्चय धरम मुक्ति में भेजे, बाकी सब व्यवहार है॥

एक-एक धर्म की पूजा-भक्त को धर्म धारण करने की अचूक सीख देती है। रचनाकर्मी पूज्य आर्यिका स्वस्ति भूषण जी जयमाला के एक प्रसंग में इन्हीं

भावों को अपने लालित्यपूर्ण ज्ञेय छंदों में ढाल कर कहती हैं–

दश धर्मों की ज्योति से, ज्योतिर्मय है लोक।
आलोकित मम आत्म हो, सुधरे मम परलोक॥

वस्तुतः ये दश धर्म आत्म रूपी राम के दस मुख हैं जैसे दशानन रावण के दस मुख थे जो वासना और अहंकार के प्रतीक थे, परन्तु आत्म–राम के ये दस सुमुख–धर्म की उज्ज्वलता के प्रतिमान हैं। धर्म के सुपुत्र से हटकर यह जीव कषायों के रंग में रंगा हुआ–क्रोध, मान, माया और लोभ के वशीभूत होकर अपने आत्म–स्वभाव रूप धर्म क्षमा, मार्दव, आर्जव और शौच को भूले हुए हैं। इन सभी विभाव भावों का परित्याग किये बिना सत्य का सूर्य, संयम के प्रांगण में उतर नहीं सकता। जीवन में संयम की पालना–तप, त्याग, आकिंचन अर्थात् ममत्व और मूर्च्छा भाव के परिहार से ही हो सकती है तभी 'जीवन में ब्रह्मत्व' जो मुक्ति का साक्षात कारण है, प्राप्त हो सकता है उसको पाने की प्रेरणा स्वरूप यह छंद देखें जिसे विधान कृति का मंगलाचरण कह सकते हैं–

क्षमा भाव जीवों पर करना, मान कषाय का मर्दन करना।
माया तज आर्जव को पाना, लोभ तजो तो शौच सुहाना॥
सत्य वचन और धर्म को समझो, संयम का पालन तुम करलो।
तप से सारे कर्म खिपाना, त्याग से आतम शुद्ध बनाना।
किंचित नाहीं हुआ तुम्हारा, फिर जग क्यों लगता है प्यारा।
ब्रह्मचर्य से ब्रह्म को पाओ, अपने आतम में रम जाओ॥

इस प्रकार इस दश लक्षण रूप धर्म की महिमा अचिन्त्य और अवर्णीय है।

दशलक्षण मन शुद्धि करता, दशलक्षण तन शुद्धि करता।
दशलक्षण से संयम आवे, दशलक्षण मुक्ति ले जावे॥
शिक्षा देता, दीक्षा देता, सुरभित काया को कर देता।
महावृक्ष मुक्ति फलदायी, कष्ट हरे करता सुखदायी॥

आर्यिका श्री स्वस्ति भूषण जी की दशधर्म की पूजाओं में, जीवन में गुणों से साक्षात्कार और पाप रूप अवगुणों के परिहार की प्रबल–प्रेरणा है। बिना पापों

के प्रक्षालन के, जीवन में 'स्वस्ति' का चिन्मयी उपहार प्राप्त नहीं हो सकता। पूजाओं की भावमय गेयता से भक्त-भक्ति सागर में आकण्ठ डूबकर उन अलौकिक क्षणों में अपनी आधि-व्याधि और उपाधियों को भी भूल जाता है।

प्रत्येक धर्म पूजा की जयमाला में, माता श्री ने शब्दों से भाव-चित्रों को सादृश्य करके आत्म-गुणों का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है-

आर्जव धर्म प्रसंग देखें-

सरल भाव समता को धारें, ऐसे गुरुवर हुए हमारे।
सरल जनम का गरल हटायें, सरल ध्यान का मार्ग बतायें।।
कपटी प्राणी अधम बताया, गति तिर्यंच का पात्र बनाया।
एक कपट सौ झूठ बुलावे, फिर भी वह छुपने ना पावे।।

सत्य धर्म का पावन प्रसंग देखिये-

है सत्य शिवम्, सुन्दर महान्, यह सत्य ज्ञान प्रगटाता है।
है सत्य आत्म का उजियारा, आतम का रूप दिखाता है।।
बन करके झूठा जग में तुम, अपयश ना जग में कर लेना।
अपयश का जीवन नरक बने, तुम सत्य की राह पे चल देना।।

जो संसार की निधियाँ, छोड़ने के लिए राजी को जाते हैं, सारे सांसारिक वैभव उनके चरणों में कुंठित होकर छाया की भांति पीछा करने लगते हैं। त्याग की इस महिमा को देखें-

रागद्वेष संसार बढ़ाये, मोह आत्म को जगत घुमाये।
जग के बंधन हैं दुखदाई, निज की परिणति है सुखदाई।।
त्याग बिना जग सत्य ना दीखें, त्याग बिना संयम ना सीखें।
त्याग धर्म मुक्ति की सीढ़ी, त्याग धर्म जिनवर की पीढ़ी।।

त्याग धर्म से ही आकिंचन के भाव उदित होते हैं-मूर्च्छा और मोहभाव से उपरत होकर सारे पुद्गल के व्यापार से विराम ले लेना ही आकिंचन धर्म है। हमारी आसक्ति और मूर्च्छा का कारण बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह का सद्भाव है, जिसके कारण संसार का विस्तार है-

संसार संसरण का स्थल, इससे मुक्ती को पाना है।
उत्तम आकिंचन को प्राप्त करूँ, फिर नहीं कहीं पर जाना है॥

जीवन का सार व नवनीत एक ब्रह्मत्व की प्राप्ति है। ब्रह्मचर्य धर्म से ही इसकी प्राप्ति संभव है-ब्रह्मचर्य ही आत्म-सौन्दर्य है।

इस प्रकार दशलक्षण धर्म विधान-पूज्य आर्यिका रत्न श्री स्वस्ति भूषण माताजी की एक ऐसी काव्य-कृति है जिससे आराधक भक्त सम्यक्दर्शन विशुद्धता को प्राप्त होता हुआ, भोगों से उदासीन बनेगा और अन्ततः उसे वैराग्य रूप वीतराग भावों को प्राप्त करने में सहायक बनेगा।

विनीत-प्रस्तावना-लेखक
(पं.) निहालचन्द जैन
बीना (म.प्र.)

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेंद्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्र विधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है। आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध

लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकुट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिग्मबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व को स्वस्ति अभिवंदना पुष्प समर्पित किया जा रहा है। हम भी अभिवंदन पुष्प समर्पित कर सुवासित मन वाले हो रहे हैं।

मांडला

श्री दशलक्षण धर्म विधान

दशलक्षण पर्व कैसे मनायें?

आ. 105 स्वस्ति भूषण

मनुष्य चेतना सम्पन्न प्राणी है, इसीलिए वह जीवन की एकरस दिनचर्या से बहुत शीघ्र ऊब जाता है। वह इस नीरसता को दूर करने के लिए मनोरंजन के अनेक तरीके अपनाता है, जो अधिकांशतः घोर भौतिक होते हैं, जिसके फलस्वरूप उसे अनेक मानसिक एवं शारीरिक सन्ताप होते हैं। मनुष्य दो पंखों वाले पक्षी के समान हैं जिसका एक पंख भौतिकता और दूसरा पंख आध्यात्मिकता होती है। अगर वह दोनों पंखों में सन्तुलन बनाकर उड़ेगा, तभी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। भारत दुनिया में अध्यात्म के क्षेत्र में अगुआ रहा है, इसलिए भारतीय जानते हैं कि हमारे जीवन का लक्ष्य अन्ततः आध्यात्मिक ही है।

भारतीय उत्सव प्रिय होते हैं। उत्सव या त्योहार भी कई प्रकार के होते हैं–जैसे सामाजिक, राष्ट्रीय और धार्मिक एवं आध्यात्मिक। जैन धर्म के अनुसार दशलक्षण पर्व, अष्टान्हिका पर्व, रत्नत्रय पर्व आदि। सभी प्रकार के त्यौहार अपने साथ कोई न कोई उद्देश्य लिये रहते हैं, साथ ही त्यौहार हमारे जीवन की एकरसता को दूर कर उसे पुनर्नवा (फिर से नवीन) बना देते हैं, जीवन को आनन्द और उमंग से भर देते हैं।

आज का मनुष्य पश्चिम के प्रभाव स्वरूप घोर भौतिकतावादी और स्वार्थी होता जा रहा है। जिस तरह से उसकी उत्सव प्रियता समाप्त होती जा रही है अगर वह कोई त्यौहार मनाता भी है तो केवल वे ही त्यौहार, जिससे उसे स्वार्थ लाभ होता हो। हमारे यहाँ स्त्रियाँ करवाचौथ तथा अहोई–अष्टमी का त्यौहार बड़ी आस्था और उत्साह के साथ मनाती हैं, जिनमें पति एवं सन्तान की कल्याण कामना छिपी रहती है। पर वास्तव में स्त्रियाँ अगर घर परिवार का मंगल चाहती हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि वे स्वयं इन व्रतों की अपेक्षा

पति के नाम से मंदिर में पाठ करें, कोई व्रत, उपवास आदि जैसे णमोकार मंत्र के व्रत करें, दान दें जिससे उनका वास्तविक मंगल होगा। उन्हें अच्छे संस्कार दें, जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने में उन्हें मदद दें, साथ ही उन्हें भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर अग्रसर करें, तभी उनका पत्नी और माँ होना सार्थक माना जायेगा।

जिसमें दिन में एक बार हल्का, सुपाच्य भोजन लेकर संयम के साथ रहना चाहिए, इससे हमारे मन और तन दोनों को शान्ति प्राप्त होती है।

जिस प्रकार से हम राष्ट्र-प्रेम प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रीय त्यौहार और अपनी सामाजिक श्रेष्ठता दिखाने के लिए सामाजिक पर्व मनाते हैं उसी प्रकार से अपने आध्यामिक त्यौहारों को भी मनाना चाहिए। राष्ट्रीय एवं सामाजिक त्यौहार जहाँ हमारे भौतिक जीवन, हमारे शरीर के लिए आवश्यक हैं, वहीं आध्यात्मिक त्यौहार हमारी आत्मा के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि बिना आध्यात्मिक विकास के भौतिक विकास एकांगी और जड़ होता है और मनुष्य चेतन प्राणी है।

अब प्रश्न उठता है कि दशलक्षण पर्व किस प्रकार से मनायें, किस प्रकार से त्यौहार के लिये तैयारी करें, त्यौहार के दिन किस-किस बात का ध्यान रखें, जिस प्रकार एक मेहमान के आने के पूर्व सभी तरह की तैयारियाँ की जाती हैं। उसी तरह पर्यूषण पर्व की तैयारियाँ भी आवश्यक हैं। इसके लिए हम सबसे पहले पर्यूषण पर्व (दशलाक्षणी पर्व) को लेते हैं:

दशलक्षण महापर्व

श्रमण संस्कृति में पूर्यषण पर्व का विशेष महत्व है। वैसे तो यह पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं, किन्तु भाद्र-मास में इसका विशेष महत्व है। इस पर्व को मनाने की तैयारी बड़े पैमाने पर बड़े जोर-शोर से की जाती है। दशलक्षण पर्व के आने से पूर्व घर को पूरी तरह से स्वच्छ कर लेना चाहिए क्योंकि वर्षा के कारण घरों में नमी और नमी के कारण कीड़े-मकोड़े जन्म ले लेते हैं। रसोई की सफाई की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए। खाने-पीने की पुरानी वस्तुएं जैसे-अचार,

पापड़, बड़ियाँ, मसाले, आटा, मैदा, सूजी आदि को अलग कर देना चाहिए। खाने-पीने की पुरानी वस्तुओं का प्रयोग पर्व में नहीं करते। हरी सब्जियाँ, आलू, प्याज आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यथाशक्ति दिन में एक बार भोजन लेना चाहिए। ये सब बातें धार्मिक दृष्टिकोण के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी उचित हैं क्योंकि वर्षाकाल में एक तो वैसे ही जीवों, कीड़े-मकोड़े आदि का जन्म अधिक मात्रा में होता है दूसरे रात्रि में वे साफ दिखाई भी नहीं पड़ते। दिन में कम भोजन करना हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभप्रद है। प्रथम तो वर्षा के दिनों में कम भोजन करना श्रेयस्कर होता है, दूसरे अगर दिन से ही भोजन कर लिया गया है तो वह सोने से पहले पच भी जाता है जिससे नींद भी अच्छी आती है, पेट को रात्रि में आराम मिल जाता है। साथ ही स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। वर्षा के दिनों में बाजार में उपलब्ध होने वाली वस्तुओं को भी नहीं खाना चाहिए, साथ ही बच्चों को भी इसके विषय में समझाना चाहिए।

शास्त्रों में लिखा है-एक महीने रात्रि में भोजन और पानी का त्याग करने वालों को पन्द्रह दिन के उपवास का फल मिलता है। जो पूरे वर्ष रात्रि-भोजन का त्याग करते हैं, उन्हें 6 महीने से भी अधिक उपवास के पुण्य की प्राप्ति होती है। किसी कारणवश पूरे वर्ष रात्रि-भोजन का त्याग नहीं कर सकते, उन्हें कम से कम श्रावण और भाद्र मास में रात्रि-भोजन का त्याग अवश्य ही करना चाहिए।

शुद्ध एवं पवित्र भोजन हमारे शरीर एवं मन दोनों की शुद्धि करता है, क्योंकि कहा भी गया है-

जैसा खाये अन्न, वैसा होय मन।
जैसा पीवे पानी, वैसी बोले वाणी।।

वैसे भी जब शरीर स्वस्थ होगा, तभी हम धर्म-साधना भी कर सकते हैं-**'शरीर माद्यं खलु धर्मसाधनम्'** तन-मन शुद्ध एवं पवित्र होगा, तभी हमारा झुकाव धर्म की ओर होगा। अत: हमें खान-पान की शुद्धता एवं पवित्र कमाई का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि अगर पैसा गलत ढंग से कमाया गया है, तो उसके सेवन से हम कभी भी शान्त मन-स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकते साथ ही हमारा झुकाव भी धर्म की ओर नहीं होगा।

पर्व के दिनों में स्नान और पीने के लिए छने हुए पानी का ही प्रयोग करना चाहिए। पर्व के दिनों में राजसी एवं तामसी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए। मनुष्य को इन दिनों सदाचार का पालन करते हुए दुर्व्यसनों से दूर रहना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो यह प्रयास करना चाहिए कि पर्व के दिनो में इन दुर्व्यसनों से हमेशा के लिये छुटकारा प्राप्त कर लें। जिस क्षणिक आनन्द के लिए हम इन वस्तुओं का सेवन करते हैं, उससे शाश्वत आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती, वह धर्म का सेवन करने से ही प्राप्त हो सकती है।

पर्व के दिनों में शारीरिक शुद्धि का भी ध्यान रखना चाहिए। जिस प्रकार से चिकित्सक ऑपरेशन थियेटर में जाने से पहले अपनी शुद्धि करता है साथ ही ऑपरेशन के काम आने वाले औजारों को उबालकर शुद्ध करता है, वैसे ही मनुष्य को भी क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह आदि रोगों से ग्रसित आत्मा के ऑपरेशन के लिए मन्दिर रूपी ऑपरेशन-थियेटर में जाकर दस धर्म रूपी हथियार से ऑपरेशन कराना चाहिए। तभी हमारी आत्मा स्वच्छ, निर्मल एवं पवित्र होगी। इन दिनों मन, वचन एवं शरीर की शुद्धि का ध्यान रखते हुए देव-पूजा, शास्त्रों का पाठ, गुरु भक्ति, पूजा, व्रत आदि के द्वारा अपने को अधिकाधिक शुद्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए। मनसा, वाचा, कर्मणा, अहिंसा का पालन करते हुए ब्रह्मचर्य का सेवन करना चाहिए। जहाँ तक हो सके, इन दिनों क्रोध से बचना चाहिए क्योंकि क्रोध हमारी बुद्धि को नष्ट कर देता है जिससे सद्-असद् का ज्ञान नहीं रहता।

चूंकि पर्यूषण पर्व विशेष पर्व है इसलिए हमारा आचरण भी विशेष होना चाहिए। इन दिनों हमें उसी प्रकार से धर्माचरण करके पुण्य एकत्र करना चाहिए। जिस प्रकार से कोई व्यापारी सीजन के दिनों में पैसा कमाता है और वर्षभर बैठकर खाता है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि बाकी समय धर्म से अलग हो जायें। मनुष्य का प्रयास यह होना चाहिए कि वह हमेशा ही धर्माचरण करें, पर साथ ही पर्व के दिनों में इसका विशेष ध्यान रखें।

पर्व के दिनों में दस दिन तक हमें अच्छा श्रावक बनकर रहना चाहिए। नित्य पूजन करना चाहिए। इन दिनों बच्चों के अन्दर भी धर्म के बीज बोने का

प्रयास करना चाहिए, यह समय शुद्ध भावों से, उर्वरक भूमि बन जाती है, तभी वे अच्छे श्रावक बन सकेंगे। सभी को अपनी भौतिक दिनचर्या से पहले पूजन अवश्य कर लेना चाहिए, शाम को आरती का विशेष ध्यान रखना चाहिए। धर्म सम्बन्धी वार्ताएं सुननी चाहिएं, अधिकाधिक धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। जहाँ तक हो सके पैदल चलने का प्रयास करना चाहिए। परमावश्यक हो तभी शहर से बाहर जाना चाहिए।

मन को शुद्ध रखने के लिए मनोरंजन के भौतिक साधनों को नहीं अपनाना चाहिए, उनसे मानसिक विकार उत्पन्न होते हैं। ऐसी पत्र-पत्रिकाएं जो मन में विकार पैदा करती हों, इन दिनों नहीं पढ़ना चाहिए। इन दिनों सादा जीवन उच्च विचार का ध्यान रखें, सौन्दर्य-प्रसाधनों का प्रयोग न करें। अहिंसा धर्म का पालन करते हुए सिल्क की साड़ी एवं चमड़े से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें। इन दिनों बाल एवं दाढ़ी नहीं बनानी चाहिए। इन दिनों शारीरिक श्रृंगार भी नहीं करना चाहिए बल्कि आत्मा के श्रृंगार का ध्यान रखना चाहिए। हो सके तो मनुष्य को दस दिन तक मन्दिर में ही रहने का प्रयास करना चाहिए। पर्व से पूर्व दस दिन के पहनने के वस्त्र तैयार कर लेने चाहिए। जिससे दस दिन तक धोने की आवश्यकता ही न पड़े।

जो लोग स्वाध्याय नहीं करते, उन्हें पर्व के दिनों में स्वाध्याय की शुरुआत कर देनी चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम हमें प्रथमानुयोग के ग्रन्थ पढ़ने चाहिए, जिससे हमें अपने धर्म, तीर्थंकरों, अर्हन्तों, सिद्धों और आर्य पुरुषों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। यदि हम आचरण सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो इसके लिए रत्नकरंड श्रावकाचार, सागारधर्मामृत आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए।

पर्व के दिनों में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दिनों में बच्चों में धार्मिक संस्कार डालने हैं, क्योंकि बच्चे कच्ची मिट्टी के बने बर्तन के समान हैं, अभी जैसा चाहे आकार दे सकते हैं, जो चाहे चित्रकारी कर सकते हैं। अतः बच्चों को अच्छे संस्कार देकर अपना माता-पिता होने का कर्त्तव्य पूरा करें।

संक्षेप में अगर हम कहें तो दशलक्षण पर्व में लेने वाले नियम निम्नलिखित हैं–

1. बाह्य शुद्धि एवं आंतरिक शुद्धि का ध्यान रखते हुए छने हुए पानी का ही प्रयोग नहाने और पीने में करना चाहिए। अगर संभव हो तो जैट या कुएं का पानी पीने का प्रयत्न करें।
2. नित्यप्रति पूजन, स्वाध्याय, देवदर्शन, व्रत का जाप, शाम को आरती एवं आलोचना पाठ तथा दोनों समय सामायिक पाठ करना चाहिए।
3. प्रतिदिन थोड़ा मौन रहने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही प्रतिक्रमण भी करना चाहिए।
4. शुद्ध एवं सात्विक, अगर हो सके तो दिन में एक बार ही भोजन करें। बाहर की खाद्य वस्तुओं का इन दिनों बहिष्कार करें। जहाँ तक सम्भव हो रात्रि में जलपान आदि न करें।
5. पर्व के दिनों में सादा जीवन बितायें। सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री (विशेषकर हिंसक वस्तुएं) का उपयोग न करके आत्मिक सौन्दर्य को बढ़ाने पर ध्यान दें। चमड़े से निर्मित वस्तुओं का प्रयोग न करें।
6. हरी सब्जियों, आलू एवं पुरानी खाद्य वस्तुओं का त्याग करें।
7. तामसी वस्तुओं (शराब, मांस, मदिरा, धूम्रपान, तम्बाकू आदि नशीली वस्तुओं) का त्याग एवं क्रोध हिंसा आदि का त्याग करना चाहिए।
8. विशेष परिस्थितियों को छोड़कर शहर से बाहर जाने का त्याग करना चाहिए।

जो व्यक्ति अष्टमूलगुणों का पालन करता है वही जैन कहलाने का अधिकारी है। आठ वर्ष की उम्र में बच्चों को भी अष्टमूलगुणों (मद्य, मांस, मधु, बड़, पीपल, पाकर, उमर, कठूमर) का त्याग करना चाहिए, उसी के पश्चात् वह भगवान का अभिषेक करने के योग्य बनता है। दशलक्षण पर्व में बच्चों को पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी का व्रत रखवाने का प्रयास करना चाहिए। अगर ऐसा सम्भव न हो तो प्रारम्भ के पाँच दिन एकाशन (दिन में एक समय भोजन) करायें। पाँच वर्ष तक एकाशन करने से पंचमेरु के व्रत हो जाते हैं। इन दिनों में पंचमेरु का जाप करना चाहिए। इसी प्रकार अनन्त चतुर्दशी के 14 व्रत करने चाहिए। अनन्त चतुर्दशी के उद्यापन पर पाठ आदि करके चौदह वस्तुएं दान करनी चाहिए। दान की सामर्थ्य न होने पर व्रत दुगने करने चाहिए। इसी

तरह त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा के व्रत रखने पर रत्नत्रय के व्रत होते हैं। रत्नत्रय के व्रत तीन वर्ष तक किये जाते हैं।

दशलाक्षणी व्रत

दशलाक्षणी व्रत दस दिनों में पूरे होते हैं, साथ ही ये व्रत दस वर्ष तक किये जाते हैं। व्रत शक्तिनुसार करने चाहिए। यदि शक्ति हो तो निराहार रहें अन्यथा पानी, दूध अथवा एक समय भोजन भी कर सकते हैं। यह नियम सभी व्रतों पर लागू समझना चाहिए।

व्रतों से हम इन्द्रियों को संयमित करना सीखते हैं। संयमित जीवन से ही हम अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी सप्ताह में एक दिन पेट को आराम देना चाहिए, तभी सुचारु रूप से काम करेगा। वैसे भी हम भोजन के लिए नहीं बने हैं, भोजन हमारे लिए बना है। **'अति की इति सर्वत्र वर्जनीय है।'**–अति अच्छी वस्तु की भी बुरी होती है। जो अपना ध्यान केवल खाने पर ही केन्द्रित रखते हैं उनके विषय में महाकवि तुलसीदास जी ने कहा है–

प्रभु भक्ति में आलसी, खाने में होशियार।
तुलसी ऐसे नरन को, बार-बार धिक्कार॥

इस प्रकार से दशलाक्षणी व्रत हमें संयमित जीवन जीने की शिक्षा देते हैं।

पर्यूषण पर्व में की जाने वाली पूजा

पर्यूषण पर्व में पूजा पूर्ण विधि–विधान से करनी चाहिए।

पूजन का क्रम

अभिषेक पाठ एवं अभिषेक : सर्वप्रथम अभिषेक पाठ करते हुए अभिषेक करना चाहिए। सर्वप्रथम शुद्ध वस्त्र धारण करके भगवान का पूर्ण श्रद्धा के साथ अतिरिक्त सावधानी पूर्वक चरण–स्पर्श करें। अभिषेक करते समय–बड़ी दीनता के साथ यह सोचें कि हे प्रभो! इन्द्र ने आपका अभिषेक सुमेरू पर्वत की पाण्डुक शिला पर क्षीर–सागर के जल के एक हजार आठ कलशों से किया था, किन्तु मैं इतना सामर्थ्ययवान नहीं हूँ, इसलिए इस प्रकार से अभिषेक कर रहा हूँ। हे प्रभो! आपके इस अभिषेक से तो एक प्रकार से मैं

अपने आपको ही पवित्र कर रहा हूँ, अन्यथा आपका शरीर तो परमौदारिक था जो हमेशा सुगन्धित रहता था। हे परमात्मा! वह दिन कब आयेगा जब मेरा अन्तिम शरीर परमौदारिक शरीर को प्राप्त होगा तथा मैं मोक्ष की प्राप्ति करूँगा। इस भावना से अभिषेक प्रारम्भ करना चाहिए।

विनय पाठ : पूजन पाठ प्रदीप अथवा जिनवाणी में से भक्ति-भाव पूर्वक विनय पाठ पढ़ें।

पूजन : अष्ट द्रव्य थाली के सामने एक रिक्त थाली तैयार करके रखें जिसमें स्वास्तिक बना हुआ हो। शास्त्रानुसार पुष्पांजलि क्षेपण एवं अर्घ्य चढ़ावें। देव शास्त्र गुरु पूजन अथवा समुच्चय पूजन करें। वेदी में विराजमान भगवान की पूजा करें। यदि रविवार हो तो भगवान पार्श्वनाथ का पूजन करें। सोलहकारण पूजन करें, पंचमेरू पूजन करें, दशलक्षण पर्व का पूजन करें। स्वयंभू पाठ पढ़ें, महार्घ चढ़ायें, शांति पाठ करें, पश्चात् विसर्जन पाठ करें और अंत में पर्व की पूर्ण जाप करनी चाहिए। वह जिनवाणी में लिखी हुई है।

वास्तविक क्षमा

सभी पर्वों के बीच अपनी विशेष विशेषता रखने वाला पावन पर्व क्षमावाणी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दशलक्षण पर्वों के अन्त में मनाया जाने वाला यह पर्व सभी के मन में वर्ष भर का एकत्र मैल धोने के लिए आता है। दस दिन धर्म की गंगा में स्नानीभूत होकर इतने पवित्र हो जाते हैं कि सभी बैर भाव समाप्त हो जाता है, क्षमा भाव हृदय के अंतस्थल में उतर जाता है। मित्रता और दोस्ती के हाथों को मजबूत कर देता है। संगठन और एकता के सूत्र में बांध देता है।

सम्पूर्ण भारत वर्ष में यह पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंचन होता है। सभी लोग आपस में एक-दूसरे को क्षमा करना, क्षमा करना कहते हुए क्षमा मांगते हैं। एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावनाओं में वृद्धि होती है। वैसे भी यह पर्व विनय, प्रेम, सम्मान, संस्कृति, ज्ञान, संगठन का प्रतीक है। इसके माध्यम से लोगों में मेल-जोल बढ़ता है, बैर भाव समाप्त होता है।

पर्व तो अति उत्साह के साथ मनाया जाता है पर इस पर्व से लोगों का आत्मिक सम्बन्ध समाप्त होकर मात्र एक औपचारिकता रह गई है। क्षमा मांगकर एक-दूसरे से व्यवहार निभा लेते हैं पर अन्दर वही पुरानी बातें ज्यों की त्यों हृदय में बैठी हुई रहती हैं। चेहरे पर खिले गुलाब सी मुस्कुराहट, वाणी में मिश्री जैसी मधुरता, झुकती हुई डाली सा शरीर प्रतीत होता है। पर हृदय में वही ईर्ष्या के फफोले पड़े हुए हैं, वही क्रोध की भट्टी जल रही है। यह कैसी क्षमा है। 20-20 क्षमावाणी मना ली पर 20 वर्ष पुरानी शत्रुता अभी मिटी नहीं वैसे की वैसे है।

उनसे क्षमा मांगने का नम्बर आता है तो इधर-उधर होकर नजरें चुरा लेते हैं। क्षमा उनसे मांगते हैं, जिनसे कभी स्वप्न में भी लड़ाई नहीं हुई। क्षमा उनसे मांगते हैं जिनसे कोई विशेष वास्ता नहीं पड़ता।

आपस में दोस्तों से, मांगी क्षमा तो क्या है,
अपने विरोधियों को, क्या तुमने मना लिया है।
नाराज है पड़ौसी, कोई राज हो तो बोलो,
लेकर क्षमा का साबुन, इस आत्मा को धोलो।।

हमारा जो पड़ौसी नाराज है, जिसे हमने बिना बात फालतू में खरी खोटी सुनाई थी, अपमानित किया था जो तुमसे रूठा है। उससे क्षमा मांगनी है। जो तुमसे प्रसन्न है, खुश है, उनसे क्षमा मांगना, क्षमा का अर्थ पूर्ण नहीं करता है। क्षमावाणी का अर्थ वाणी के द्वारा मन और शरीर को पवित्र करना है।

भौतिकता और दूरदर्शन के वातावरण ने आदमी के मानसिक संतुलन को असंतुलित कर दिया है। उनकी वाणी ने भोजन और रहन-सहन को विकृत कर दिया है। आपस में बात करते हुए ऐसा लगता है जैसे लड़ रहे हों। एक बार हमने बच्चों से पूछा आप इस तरह से बात क्यों करते हैं तब उन्होंने कहा कि हमारी इस तरह बात करने की आदत है। संस्कृति और सभ्यता को भूलकर असभ्यता को संस्कृति का नाम दिया जा रहा है। ऐसी संस्कृति क्लेश, अशांति, युद्ध को जन्म देती है।

दो लोगों की आपस में लड़ाई हो जाये तो बोलना बंद हो जाता है। एक-दसरे से क्षमा मांगने को तैयार नहीं होते। किसी के कहने से क्षमा मांगने

को तैयार हो जाते हैं तो समस्या बनती है कौन पहले क्षमा मांगे। क्षमा भी मांगते हैं तो अकड़ते हुए, मेरी गलती तो थी नहीं फिर भी क्षमा मांग रहा हूँ। क्षमा झुकाती है, अकड़ती नहीं। अकड़ती हुई क्षमा कहती है कि इस बार छोड़ दिया फिर देख लूँगा। कुछ लोग क्षमा नहीं माफी मांगते हैं गलती करने के बाद कहते हैं कि माफी मांग रहा हूँ माफ करदो। बाहर आकर उसी गलती को दोहराते हैं। फिर माफी मांगते हुए कहते हैं माफी तो मांग ली फिर क्यों अकड़ते हो? माफी मांग कर सोचते हैं जैसे कोई एहसान कर दिया हो। क्षमा-माफी के शब्द रह गये हैं। वास्तव में क्षमा और माफी नहीं मांगी जाती है। एक रस्म पूरी की जाती है। मामला गड़बड़ न हो इसीलिए एक दस्तूर निभाया जाता है। Sorry जैसे शब्दों को प्रयोग करके क्षमा धर्म प्राप्ति का अनभुव करते हैं।

वर्तमान समय में नये-नये प्रकार की क्षमा का प्रादुर्भाव हो गया है। लोग कार्ड छपवाते हैं उसमें चंद शब्दों के द्वारा क्षमा याचना प्रकट की जाती है। उसे एक लिफाफे में रखकर प्रेषित किया जाता है। कार्ड कर्मचारी के पास पहुंचता है वह मालिक को बताता है कि वहाँ से कार्ड आया है। मालिक को यदि फुर्सत होगी तो एक नजर डाल लेगा वरना बिना देखे ही छोड़ दिया जाता है। कार्ड को देखकर क्षमावाणी मनाने का उत्तम तरीका नहीं। बिना बोले क्षमावाणी असम्भव है। कागज की क्षमा हृदय की क्षमा नहीं हो सकती। कागज से सम्मान, कागज की क्षमा, कागज का निमंत्रण यह एक औपचारिकता है। कार्य न करने की खानापूर्ति है। पर लोगों ने आज इसे फैशन बना लिया। इसमें भी होड़ लगती है किसका कार्ड सबसे अच्छा, किसका कार्ड सबसे सुन्दर है। हमारा ध्यान क्षमा पर नहीं बल्कि उस पर लिखे शब्द और कार्ड की सुन्दरता पर जाता है।

क्षमावाणी वर्ष में तीन बार मनानी चाहिए क्योंकि पर्यूषण पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं। पर लोगों को भादों के पूर्यषण का तो पता चलता है पर बाकी दो का पता ही नहीं चलता। वर्ष में तीन बार क्षमावाणी आने के कारण भी हैं। अप्रत्याख्यान, क्रोधादि, कषाय 6 माह से अधिक नहीं चलती, यदि चले तो वह अनंतानुबंधी हो जाती है जो अनन्त संसार का कारण है। इसीलिए छह महीने के अन्दर ही क्षमावाणी हो जाने से कषाय मिट जाती है।

क्षमावाणी के निमित्त से बैर भाव धुल जाता है। वैसे तो बैर भाव एक दिन भी रखने की वस्तु नहीं है। कमठ के बैर ने 10 भव तक कष्ट और पीड़ा दी।

दश भव तक जिसने बैर किया, पीड़ायें देकर मनमानी।
फिर हार मानकर चरणों में, झुक गया स्वयं वह अभिमानी।।

क्या पारसनाथ भगवान् के पास शक्ति नहीं थी, जिन मुनिराजों के ऊपर उपसर्ग हुआ क्या वे शक्तिहीन थे? नहीं वे धीर, वीर उपसर्ग विजयी थे। किसी कवि ने कहा है–

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल है।
उसकी क्या जो, दंत हीन विषहीन और सरल है।।

जहर होते हुए सर्प न काटे, शक्ति होते हुए भी छोड़ दे, उसकी क्षमा तो वर्णनीय है पर जिसके पास न दांत हैं, न विष है, न शक्ति है और वह फिर लोगों को न डसे तो कोई आश्चर्य नहीं है।

'क्षमा करना कायरों का नहीं, वीरो का काम है।'

ढिंढ़ोरी सुनकर एक दुबले-पतले आदमी ने पहलवान से कुश्ती लड़ने का दम्भ भर लिया। सभी ने मना किया पर वह नहीं माना। समय आया अखाड़े में पहुंच गया। पहलवान से जैसे ही हाथ मिलाया एक झटका लगा। कुश्ती प्रारम्भ हुई एक घूंसा पड़ते ही जमीन चाटने लगा। हाथ-पैर झाड़ते हुए बोला जा तुझे माफ किया। सभी हंसने लगे। यदि पहलवान कहे इस बात को तो शोभा देता है पर यदि कमजोर इस बात को कहे तो शोभा नहीं देता। महावीर ने करुणा कर सभी जीवों को क्षमा किया।

क्षमा सिर्फ समाज से नहीं, देश, राष्ट्र से नहीं बल्कि सम्पूर्ण प्राणी मात्र से मांगनी चाहिए। एकेन्द्रिय, दो, तीन, चार, पांच सभी जीवों से क्षमा भाव करें। साधु प्रतिदिन प्रतिक्रमण करते हुए कहते हैं–

खम्मामि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु में।
महत्ती में सव्व भूदेसु, बैरं मज्झं न केणवि।।

अर्थ–सब जीव मुझे क्षमा करें, मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ। समस्त जीवों से मेरा मैत्री भाव है। मेरा किसी से बैर भाव नहीं है।

क्षमा आत्मा का धर्म है, क्षमा आत्मा का गुण है। क्षमा धर्म की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए। क्षमावाणी के माध्यम से धीरे-धीरे आगे बढ़कर क्षमा धर्म प्राप्त किया जा सकता है।

आज तक क्षमा दूसरों से मांगी है स्वयं से भी मांगे। आप सोचेंगे कि स्वयं के प्रति हमने क्या अपराध किया जो क्षमा मांगे। वास्तव में हमने स्वयं के प्रति बहुत अपराध किया है। क्रोध, मान, माया, लोभ और पापों से अपनी आत्मा को कष्ट दे रहे हैं। पर क्षमा मांगने का कभी विचार ही नहीं किया। स्वपर कल्याणकारी क्षमावाणी, क्षमा धर्म को धारण कर जीवन में शांति और आत्मिक सुख को प्राप्त करें।

क्या करें

1. क्षमा पर्व पर पूर्व दिनों की भांति क्षमावाणी की पूजन करें एवम् वाणी की क्षमा के साथ अग्रसर होकर क्षमा धर्म की प्राप्ति करें।
2. सभी से सच्चे हृदय से क्षमा मांगे।
3. जिससे द्वेष हो उसे उपहार भेंट कर प्रसन्न करें।
4. सभी से जयजिनेन्द्र करने का शुभ संकल्प ग्रहण करें। जय जिनेन्द्र करते वक्त चेहरे पर मुस्कुराहट का होना आवश्यक है।

विधान प्रस्तावना

चौपाई

चौबीसों जिनराज की महिमा, गा सकते ना इनकी गरिमा।
महिमा मंडित आप देव हैं, शुद्ध चरित से आत्म सेव हैं॥
तप चारित्र से खरा बनाया, मृत्यु को निर्वाण कराया।
तीर्थंकर वाणी कल्याणी, प्रभु की वाणी है जिनवाणी॥
युग बीते सदियाँ हैं बीती, मेरी श्वांसे हैं सब रीती।
हम अपना उद्धार करायें, इससे शरण आपकी आयें॥
जीवन में तुमने जो धारा, दश धर्मों का बाग संवारा।
उसी फूल की खुशबू पायें, अपने जीवन को महकायें॥
क्षमा मार्दव आर्जव आया, शौच सत्य संयम मन भाया।
आकिंचन तप त्याग को धारें, ब्रह्मचर्य से पार उतारें॥
दशलक्षण विधान की रचना, दुष्ट कर्म से हमको बचना।
'स्वस्ति' उत्तम धर्म को पायें, भक्ति से विधान रचायें॥

श्री दशलक्षण धर्म विधान

समुच्चय पूजा

गीता छंद (स्थापना)

उत्तम धरम संसार में, जीवों का ही आधार है।
निश्चय धरम मुक्ति में भेजे, बाकी सब व्यवहार है।।
उत्तम क्षमा है मार्दव, सत्यादि यह दश धर्म है।
आव्हान करते हम उन्हीं का, धर्म का यह मर्म है।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितौं भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

त्रिभंगी छंद

जग दुख का सागर, धर्म की गागर, भरने भक्त ये आये हैं।
जल करता पावन, शुद्धि का साधन, मैल हटाने आये हैं।।
दश धर्म को धारूँ, मोक्ष सिधारूँ, धर्मों से जीवन महके।
मम भाव है उत्तम, हटता है तम, धर्मों से जीवन चहके।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग है ये मेला, बड़ा झमेला, मोहित करके बांध लिया।
चंदन से चरचूँ, नाथ को अरचूँ, शीतल आतम जान लिया।।
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षणधर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब दुख आता है, सुख जाता है, भक्ति तब जग जाती है।
उज्ज्वल है आतम, मिटता है तम, सविता तब हो जाती है।।
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों से आकुल, मन है व्याकुल, रह-रह कर यह बरस रहा।
पुष्पों से सुंदर, आतम अंदर, सुख पाने को तरस रहा॥
दश धर्म को धारूँ, मोक्ष सिधारूँ, धर्मों से जीवन महके।
मम भाव है उत्तम, हटता है तम, धर्मों से जीवन चहके॥

ॐ ह्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा खाने की, सुख पाने की, क्षण-क्षण जागृत होती है।
संयम ना आया, खूब खिलाया, पाप बीज का बोती है॥
दश धर्म को...........

ॐ ह्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा, कर्म ने घेरा, दीप जलाये बैठे हैं।
केवल की आशा, ज्ञान प्रकाशा, पाने हर दम देखे हैं।
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सज्जन के स्वामी, अंतर्यामी, कर्म धूम को उड़वाना।
हम करें प्रतीक्षा, आपकी इच्छा, जल्दी पूरी करवाना॥
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तप का फल लाऊं, चरण चढ़ाऊं, फल से फल को दे देना।
संपूर्ण गुणाकर, हे रत्नाकर, मुक्ति निलय को दे देना॥
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गगन औ धरती, आत्म संवरती, निज पहचान नहीं पाया।
अर्घ्यों की माला, कर्म का जाला, तोड़ नहीं मैं अब पाया॥
दश धर्म को...........

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मों के अर्घ

जीवन की चाहत है मन में, पर दु:खों से यह ग्रसित हुआ।
अर्घ्यों से पूजा करते हैं, सुख पाने जीवन प्राप्त किया।।
दु:खों के चाहे शूल मिले, सु:खों के चाहे फूल खिलें।
दोनों में समता भाव रहे, तब क्षमा धर्म का ज्ञान मिले।।
ॐ ह्री उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चाहता पर कर्म ना, अच्छे करन के भाव हैं।
उद्धार हो मेरा जगत से, बस आपका प्रभाव है।।
अभिमान के परिधान तज, मार्दव धरम पूजा करें।
आराधना से मुक्ति पावें, भाव मन में ये धरें।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यम् शिवम् ये आत्मा, और रूप सुन्दर है बड़ा।
जब पद अनर्घ्य को पायेंगे, तब मुक्ति का मिलता घड़ा।।
मन से अलग, वच से अलग, काया अलग है बोलती।
तीनों मिलें जब संग में, तब द्वार मुक्ति खोलती।।
ॐ ह्री उत्तमआर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधी दौड़ दौड़ता, अहम् बढ़ा ना धर्म है।
अर्घ्य को चढ़ाऊ मैं, ध्यान आत्म मर्म है।।
सत्य धर्म सत्यज्ञान, सत्य की पूजा करूँ।
सत्यमेव जयति हो, सत्य को नमन करूँ।।
ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रम का अंधियारा हट जाये, श्रद्धा की उजियाली फैले।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, मुक्ति में जाकर के रह लें।।
अर्जन संग्रह का भाव तजूँ, यह लोभ विसर्जित हो जाये।
हम शौच धर्म पूजा करते, क्रोधादि कषायें नश जायें।।
ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं भक्ति के भावों से, तुम्हें पूजता प्रभो।
ये अर्घ्य की ज्योति से, तुम्हें पूजा है विभो॥
मन से वचन से काय से, संयम को धारूँगा।
रक्षा करूँ मैं जीवों की, निज को निहारूँगा॥
ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सृजन विसर्जन निश्चित जान, अर्घ्य चढ़ायें करम की हान।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥
तप से सिद्धि, तप से ध्यान, तप से पायें मुक्ति महान।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥
ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा आकाश समान, पूरी ना होती।
अर्घ्यों का लायें थाल, ज्ञान मिले मोती॥
है कठिन मोह का त्याग, जब ये हो जाये।
संसार का क्षण में नाश, मुक्ति को पायें॥
ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरते जीते जीवन जाऐं, पद अनर्घ्य की आश लगाऐं॥
करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम॥
भूख प्यास तन की हो दूर, सब ही धर्म करें भरपूर।
करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम॥
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक ज्योति जगायी थी मन में, उस ज्योति ने निज ध्यान किया।
अर्घ्यों की ज्योति जगमग है, मुक्ति पथ जिसने सरल किया॥
भवसागर से अब पार होयें, अर्घ्यों की थाली हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

दश धर्मों की वंदना, करें भक्ति से जीव।
धारण इनको हम करें, करें इन्हीं से प्रीत॥
दश धर्मों की ज्योति से, ज्योतिर्मय है लोक।
आलोकित मम आत्म हो, सुधरे मम परलोक॥

चौपाई

उत्तम दश धर्मों को धारें, आत्म स्वरूपी आत्म निहारें।
दशलक्षण दीपक मुक्ति का, दशलक्षण साधन भक्ति का॥
दशविधि से यह धरम बताया, लक्षण से इसको समझाया।
पर्वत से ऊंचा है धर्म, सागर से गहरा है धर्म॥
धर्म जीव का बने सहारा, धर्म जीवन को देय किनारा।
जो भी इसको धारण करता, निश्चित ही वह मुक्ति वरता॥
क्षमा भाव जीवों पर करना, मान का भी तो मर्दन करना।
माया तज आर्जव को पाना, लोभ तजो तो शौच सुहाना॥
सत्य वचन और धर्म को समझो, संयम को तुम पालन कर लो।
तप से सारे कर्म खिपाना, त्याग से आतम शुद्ध बनाना॥
किंचित नाही हुआ तुम्हारा, फिर जग क्यों लगता है प्यारा।
ब्रह्मचर्य से ब्रह्म को पाओ, अपने आतम में रम जाओ॥
दशलक्षण मन शुद्धि करता, दशलक्षण तन शुद्धि करता।
दशलक्षण से संयम आवे, दशलक्षण मुक्ति ले जावे॥
शिक्षा देता दीक्षा देता, सुरभित काया को कर देता।
महावृक्ष मुक्ति फलदायी, कष्ट हरे होता सुखदायी॥
दशलक्षण के व्रत भी धारो, संयम से कर्मों को वारो।
उत्कृष्ट विधि उपवास से कीजे, दश वर्षों तक यह कर लीजे॥
वरना बेला तेला करिये, अथवा शक्ति से ही भरिये।

शक्तिहीन अनुमोदन करता, या एकाशन से ही करता॥
पूरे हों उद्यापन करना, वरना व्रत को दूना करना।
यथाशक्ति शुभ दान भी देना, पुण्यवृद्धि के फल को लेना॥
भक्ति शक्ति से व्रत करना, श्रद्धा से मुक्ति को वरना॥

दोहा

दशलक्षण की ज्योति से, ज्योतिर्मय है लोक।
आलोकित मम आत्म हो, सुधरे मम परलोक॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीर्थंकर भगवान की, महिमा अपरम्पार।
स्वारथ के संसार में, यही एक आधार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत ॥

उत्तम क्षमा धर्म पूजन

शंभु छंद (स्थापना)

ये जग चाहे कुछ भी कर ले, मैं क्षमा धर्म को धारूँगा।
बिन क्षमा धर्म ना होता है, अपने जीवन को वारूँगा॥
चारों गतियों के जीवों पर, हम क्षमा भावना हैं रखते।
भक्ति के भावों से ही हम, शुभ क्षमा धर्म पूजा करते॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् आव्हाननं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभु (तर्ज : भला किसी का....)

बातों-बातों में यह जीवन, क्षण-क्षण करके ही बीत गया।
ना शुद्धि की ना समृद्धि, जल से तन को बस शुद्ध किया॥
दु:खों के चाहे शूल मिले, सु:खों के चाहे फूल खिलें।
दोनों में समता भाव रहे, तब क्षमा धर्म का ज्ञान मिले॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य बिना जग राहे बढ़े, यह राग आग बन जाता है।
अग्नि में तपता है जीवन, तन मन ना शांति पाता है॥
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार स्वार्थ का मेला है, हमने अपनों को देख लिया।
अमृत को पिलाने आये थे, उनके हाथों से जहर पिया॥
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की खुशबू को पाकर, मानव मदहोश ही होता है।
आतम की याद न आती है, जब दुख आता तब रोता है॥
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कमजोरी भोजन में आई, तप त्याग ना काया करती है।
तृष्णा की ज्वाला बुझ जाये, पूजा से आशा करती है।।
दु:खों के चाहे शूल मिले, सु:खों के चाहे फूल खिलें।
दोनों में समता भाव रहे, तब क्षमा धर्म का ज्ञान मिले।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरे में घूँमा, गिर-गिर कर उठ ना पाया हूँ।
दो ज्ञान दीप की ज्योति हमें, जग में आकर भरमाया हूँ।।
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाऊं पर, कर्मों पे असर ना होता है।
तप दावानल में कर्म दहे, तब बीज धर्म का बोता है।।
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लाचार बना फल ना पाया, लाचारी मेरी भारी है।
पुरूषार्थ करूं मुक्ति फल का, मुक्ति संसार से न्यारी है।।
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन की चाहत है मन में, पर दु:खों से यह ग्रसित हुआ।
अर्घ्यों से पूजा करते हैं, सुख पाने जीवन प्राप्त किया।।
दु:खों के चाहे...........

ॐ ह्री उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

साधु क्षमा की मूर्ति हैं, नित्य करें गुणगान।
क्षमा धर्म पायें सभी, बारंबार प्रणाम।।

मंडलोस्परि पुष्पांजलि

प्रत्येक अर्घ्य

छंद-भुजंगप्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

अशुभ कर्म से पृथ्वी थावर बने हैं।
उदय कर्म भोगे और दुख भी घने हैं।।
स्थावर की रक्षा का भाव बनाऊँ।।
क्षमा धर्म आतम से पालन कराऊँ।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में पड़े कष्ट, भोगें सदा ही।
उदय कर्म ऐसा, ना सुख है कदा ही।।
जल काय रक्षा का भाव बनाऊँ।
क्षमा धर्म धारी, की पूजा रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं जलकायिक परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि काय प्राणी, नहीं ज्ञान होता।
जो ज्ञानी है उनको नहीं दुःख होता।।
अग्नि काय रक्षा का भाव बनाऊँ।
क्षमा धर्म धारी, की पूजा रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु बने हैं, सदा ही वे बहते।
औ कष्टो की पीड़ा को नाही वे कहते।।
वायु की रक्षा का भाव बनाऊँ।
क्षमा धर्म धारी, की पूजा रचाऊँ।।

ॐ ह्री वायुकायिक परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरित काय प्राणी नहिं बोल पाये।
दबे हैं कटे हैं सदा कष्ट पाये।।
वनस्पति रक्षा का भाव बनाऊँ।
क्षमा धर्म धारी, की पूजा रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थावर के पन भेद, भगवान कहते।
वे सूक्ष्म हैं बादर हैं, सब भेद रहते।।
थावर की रक्षा का भाव बनाऊँ।
क्षमा धर्म धारी, की पूजा रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मस्थूलपंचस्थावर परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लट जोंक इल्ली जो दो इन्द्रिय पाये।
कौड़ी है शंख, दो इन्द्रिय कहाये।।
नहीं कष्ट देते मुनिराज इनको।
क्षमा धर्म आतम में रहता है जिनको।।

ॐ ह्रीं द्वीइन्द्रिय जीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चींटी हो खटमल ते इन्द्रिय कहाये।
औ अज्ञानता को, सदा साथ लायें।।
नहीं कष्ट देते मुनिराज इनको।
क्षमा धर्म आतम में रहता है जिनको।।

ॐ ह्रीं त्रीइन्द्रीय जीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मक्खी हो मच्छर या भंवरा बताया।
सदा सौख्य पाने में जीवन बिताया।।
नहीं कष्ट देते मुनिराज इनको।
क्षमा धर्म आतम में रहता है जिनको।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी इन्द्रियां मिल गईं पुण्य योगे।
सैनी असैनी बने दु:ख भोगे।।
नहीं कष्ट देते मुनिराज इनको।
क्षमा धर्म आतम में है रहता जिनको।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रियजीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक के निवासी सदा दु:ख पावें।
नहिं चैन क्षण को, सदा दुख उठावें।।

नरकवासियों में क्षमा भाव धारा।
मुनिराज का धर्म, जग में है न्यारा।।

ॐ ह्रीं नारकी जीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने राग द्वेषी ये मानुष के प्राणी।
नहीं भायी जिनको है, जिनवर की वाणी।।
ये मानुष जनों में, क्षमा भाव धारा।
मुनिराज का धर्म, जग में है न्यारा।।

ॐ ह्रीं मनुष्यजीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर हों ज्योतिष हों, या कल्पवासी।
ये देव गति हैं, भवन के निवासी।।
सभी देवता में क्षमा भाव धारा।
मुनिराज का धर्म, जग में है न्यारा।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधि देवजीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

हितकारी जिन धर्म है, गीत इसी के गायें।
क्षमा धर्म को धारकर, मुक्ति को हम जायें।।

बेसरी छंद (तर्ज : चौपाई)

त्यागा है जिन राग औ द्वेषा, प्राप्त किया आतम निर्दोषा।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, समता के होते अधिकारी।।
कोई दुष्ट गालियां देवे, अथवा कोई तन हर लेवे।
करे अपमान और करवावे, किन्तु क्षमा धर्म ना जावे।।
पूर्व कर्म का बैर विचारा, जिसने आकर आज निकारा।
क्यों अधीर होता है अब तू, हंसते-हंसते कर्म बंधा तू।।
कोई दुखी कष्ट में पाये, करूणा से दुख दूर भगायें।
नहिं किसी पर क्रोध को करते, क्षमा धर्म से क्रोध को हरते।।

क्रोध समान जहर ना कोई, क्षमा के सम ना अमृत होई।
क्रोध तजा तो क्षमा को पाया, क्षमा से जीवन उच्च बनाया।।
आत्म ध्यान में क्षमा को ध्यावें, चारित में भी क्षमा को लावें।
क्षमा धर्म से प्रीति लगाओ, तब ही निश्चित शांति पाओ।।
क्षमा वीर भूषण कहलाता, क्षमा वान मुक्ति को पाता।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, ऐसे गुरू की महिमा न्यारी।।
मुनिवर को हम शीश झुकायें, क्षमा धर्म उनसे ही पायें।।

दोहा

समता धर वंदन करें, क्षमा करो भगवान।
क्षमा धर्म के धारी हों, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं त्रसस्थावर समस्तजीव परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा को पालिये, क्रोध होयेगा दूर।
धर्म धार मुक्ति वरो, सुख पाओ भरपूर।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम मार्दव धर्म पूजन

गीता छंद (स्थापना)

उत्तम धरम मार्दव हमारा, मान तज निःस्वार्थ है।
सब चाह तज चिंतायें जाती, तब बने परमार्थ है।।
मम भावना कोमल हुई, शुभ भाव भी निर्मल हुये।
आराधना हम नित्य करते, आत्म सुख को ले लिये।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (गीता छंद)

प्यास जन्मों से लगी पर, ज्ञान पानी ना मिला।
जिन धर्म वर्षा न हुई, ना पंथ मुक्ति का मिला।।

अभिमान के परिधान तज, मार्दव धरम पूजा करें।
आराधना से मुक्ति पावें, भाव मन में ये धरें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाओं की ज्वालाओं ने, मम आत्म को झुलसाया है।
जग दाह देता राह ना, संसार में भटकाया है॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंडित आत्मा, पर कीच कर्मों में धंसा।
अक्षय पदों की चाह मुझको, किन्तु कर्मों में फंसा॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ प्रेम की मनुहार ले, यह जीव जग में फंस गया।
ना पूरी हो इच्छायें इनकी, तो भी जग में ग्रस गया॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पेट को भोजन चढ़ाता, पर कभी ना भरता है।
नैवेद्य से यह भूख मेटो, कर्म बंधन हरता है॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान मय अब तक रहा, पर ज्ञान दीपक ना जला।
सत्पथ दिखा दो मुझको भगवन, तुम हटा दो यह बला॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी व्यथा किस को सुनाऊं, वह कथा कह टालता।
सद्बुद्धि ना सन्मार्ग दे बस, बात मन में सालता॥
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आता तरस आंखें बरसती, कोई ना जग में हुआ।
संसार मेला स्वार्थ का, बस जान मैंने अब लिया।।
अभिमान के परिधान तज, मार्दव धरम पूजा करें।
आराधना से मुक्ति पावें, भाव मन में ये धरें।।

ॐ ह्री उत्तममार्दव धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चाहता पर कर्म ना, अच्छे करन के भाव हैं।
उद्धार हो मेरा जगत से, बस आपका प्रभाव है।।
अभिमान के..................

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **आशा का यह दीप है, आ जाओ हे नाथ।**
कब से बैठे हम यहां, मिले मुक्ति का पाथ।।

मंडलोस्परि:पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

राग तजा वैराग्य को पाया, वीतरागता का पद भाया।
दोष अठारह छोड़ के स्वामी, आप हुये हो अंतर्यामी।।
नमन-नमन बस नमन हैं करते, अभिमान इससे ही हरते।
उत्तम मार्दव धर्म को ध्याऊँ, मुनिराज को शीश झुकाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेव पद नमन–मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग प्रभु जो भी कहते, धर्म के झरने नित ही बहते।
बन जाती है वह जिनवाणी, भव्यों को होती कल्याणी।।
नमन–नमन..............

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्म पद नमन–मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधायें कर्मों से आती, बाधा मंजिल ना पहुंचाती।
तप से कर्म का मैल हटाया, सिद्धी ने सिद्धों को पाया।।
नमन–नमन..............

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपद नमन–मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ पर हर क्षण चलते, संग शिष्यों के नियम भी पलते।
हम शिष्यों की है अभिलाषा, हो मुक्ति में मेरा वासा॥
नमन-नमन बस नमन हैं करते, अभिमान इससे ही हरते।
उत्तम मार्दव धर्म को ध्याऊँ, मुनिराज को शीश झुकाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान ज्ञान के संग आ जाये, कब आया यह पता ना पाये।
उपाध्याय मुनिवर हैं ज्ञानी, किन्तु नहीं होते अभिमानी॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिन चैत्य को वंदूं, जिनवर चरण को नित अभिनंदूं।
नमन करें तो मन शुभ होता, शुभ मन कर्मों को खो देता॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम जिन चैत्य पद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर विमान में हैं चैत्यालय, पूजन करने बने हैं आलय।
रत्नमयी जिन बिम्बों को ध्याऊं, नित उठ चरण में शीश झुकाऊं॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक जिन चैत्यपद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक में जिनगृह राजे, सुंदर प्रतिमा उनमें साजे।
प्रतिमाओं का वंदन करते, कर्म काट दु:खों को हरते॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्रीमध्यलोकसम्बन्धी-जिन-चैत्य नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी भवनों के वासी, भक्ति से निज आत्म विकासी।
भवन में अकृत्रिम चैत्यालय, देव भक्ति करते हैं सुर लय॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्रीअधोलोकसम्बन्धी जिन-चैत्यपद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय क्षेत्र में अतिशय बरसे, पापी अतिशय पाने तरसे।
अतिशय क्षेत्र को अर्घ्य चढ़ाऊं, जाकर वंदन को कर आऊं॥
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्रीअतिशयक्षेत्रसम्बन्धी-जिन-चैत्य नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का जब रूप सुहाया, आतम ने तब ध्यान लगाया।
आतम तप आतम मिल जाये, सिद्ध क्षेत्र को हम भी ध्यायें।।
नमन-नमन...............

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपद नमन-मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

गुरु कहें हे मान जा, मार्दव तब ही आयें।
उत्तम मार्दव धर्म को, शत-शत शीश झुकायें।।

पद्धरि

उत्तम मार्दव शुभ धर्म कहा, सब जीवों को दे सौख्य अहा।
मार्दव से मान भी हारा है, मार्दव शुभ धर्म सहारा है।।
जब अभिमान के वस्त्र तजें, तब मार्दव धर्म को आप भजें।
अभिमानी धर्म न करता है, कर्मों का पर्वत चढ़ता है।।
अभिमानी धर्म छलावा है, आतम का मात्र भुलावा है।
अपने को बड़ा समझता है, अवगुण को सारे भरता है।।
मानी सम्मान नहीं पाता, अपमान होय तो घबराता।
रावण, कौरव और कंस हुये, अभिमान से मिटता वंश हिये।।
इनसे शिक्षा को ले लेना, मार्दव को धारण कर लेना।
है फूल सी कोमल मार्दवता, कलियों सी सुंदर मार्दवता।।
बुद्धि शुद्धि कर देती हैं, गुण महा विनय को देती है।
दर्शन शुभ ज्ञान विनय महान, चारित उपचार को है प्रणाम।
गुणवान देखकर झुक जाना, अभिमान ना अपना बतलाना।
जो विनयवान गुरू प्रेम मिले, गुण बगिया के शुभ फूल खिलें।
गुण विनयवान न लड़ता है, वह कभी कहीं ना अड़ता है।।

बुद्धि निर्मल हो जाती है, चहुं ओर शांति छा जाती है।
जाति तप रूप ना मद करना, ज्ञानी बन कर्मों को हरना॥
बल ऋद्धि ज्ञान या पूजा हो, मार्दव पा काम ना दूजा हो।
उत्तम मार्दव को अपनाना, संयम से पालन करवाना॥
उद्धार आत्म का करता है, चुन-चुन अवगुण को हरता है।
स्वाभाविक शक्ति जग जाये, आतम स्वभाव भी मिल जाये॥
समता जीवन की पूँजी है, मार्दव की वाणी गूंजी है।
उत्तम मार्दव मुनिवर पालें, कट जाते कर्म के हैं जाले॥
'स्वस्ति' मार्दव को पाना है, हमको मुक्ति में जाना है॥

दोहा

कामधेनु सम धर्म है, कल्पवृक्ष सम ज्ञान।
मार्दव धर्म को पालिये, मिले ज्ञान सम्मान॥
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

डाली सम झुककर रहो, तोड़ सके ना कोय।
आंधी या तूफान हो, प्रभु सहाई होय॥
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम आर्जव धर्म पूजन

गीता छंद (स्थापना) (प्रभु पतित पावन....)

मन से सरल तन से सरल, काया सरल ना विकार है।
उत्तम धरम, जाने मरम, होते वही मुनिराज हैं।।
धर्म आर्जव धार कर, परपंच सारे दूर हों।
पूजा करें हम भाव से, आर्जव धरम भरपूर हो।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छंद (प्रभु पतित पावन....)

इच्छाओं से अभिभूत हो, उत्तेजना संग में रहे।
हम कर्म फल ही मानते, पुरूषार्थ दृष्टि ना लहे।।
मन से अलग, वच से अलग, काया अलग है बोलती।
तीनों मिलें जब संग में, तब द्वार मुक्ति खोलती।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि प्रखर है रूप सुंदर, किन्तु मन संताप है।
चंदन चढ़ायें चरण भक्ति, दूर करती ताप है।।
मन से अलग...........

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदों के जो धनी, अक्षत से हम पूजा करें।
उज्ज्वल हमारा आत्मा, हम सर्व कर्मों को हरें।।
मन से अलग...........

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्याचरण हों भाव सुंदर, और मन भी शांत हो।
संसार भौतिक माया में, यह मन नहीं प्राशांत हो।।
मन से अलग...........

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूखा तन भोजन दवाई, हर समय खाने लगा।
दिन-रात जिव्हा स्वाद लेती, ना समय है भक्ति का।।
मन से अलग, वच से अलग, काया अलग है बोलती।
तीनों मिलें जब संग में, तब द्वार मुक्ति खोलती।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान केवल पा लिया, अब हमको भी अवसर मिले।
हम सूर्य चन्द्र के दीप से, पूजा करें मन जगमगे।।
मन से अलग............

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मयोगी धर्म करके, कर्म को है नाशता।
यह धूप अग्नि में चढ़ाऊं, दूर हो यह दासता।।
मन से अलग............

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति फल के सामने, ये जगत फल बेकार हैं।
मन शांत कर ये फल को लाया, कर्म का संहार है।।
मन से अलग............

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यम् शिवम् ये आत्मा, और रूप सुन्दर है बड़ा।
जब पद अनर्घ्य को पायेंगे, तब मुक्ति का मिलता घड़ा।।
मन से अलग............

ॐ ह्री उत्तमआर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आर्जव की छाया मिले, जले ज्ञान का दीप।
मम बुद्धि शुद्धि करो, महके धर्म की प्रीत।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

शेर चाल (देदी हमें आजादी)

अरिहंत देव जगत में रह, जगत तजा है।
आतम से आत्मज्ञानी का ही, ध्यान भजा है॥
छयालीस मूलगुण को लिये, देव हमारे।
भक्तों के संकटों को हरो, बनो सहारे॥

ॐ ह्रीं श्री छयालीस गुण सहित जिनचरण नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्जव धरम उत्तम धनी अरिहंत देव हैं।
साक्षात् सरल ध्यान में, निज आत्म सेव हैं॥
मन से वचन से काय की, हमें एकता मिले।
वरदान ये ही मुक्ति का, सुख फूल भी खिले॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तजीव अरहन्त पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से हुए मुक्त आप सिद्ध हो गये।
धर्मों से हुए युक्त आप सिद्ध हो गये॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलोक ज्ञान आत्मा का, सबसे है बड़ा।
यह ज्ञान हमें दान मिले, इससे हूँ खड़ा॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं श्री आचार्य पद परोक्ष नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सिद्ध शिला वासी तुम्हें, नमस्कार है।
उत्तम धरम के धारी, तुम्हें नमस्कार है॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं सिद्ध शिला स्थित मुक्तात्मपद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुणों युक्त सूर्य, आप हैं महान।
आर्जव धरम के धारी, तुम्हें करते हैं प्रणाम॥
मन से वचन से काय की, हमें एकता मिले।
वरदान ये ही मुक्ति का, सुख फूल भी खिले॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य पद परोक्ष नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यक्ष में परोक्ष हम, नमन नित करें।
आचार्य आचरण से बने, कर्म को हरें॥
मन से वचन.........

ॐ ह्रीं श्री आचार्य पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पनबीस हैं गुण आपके, पाठक हैं हमारे।
शुभ ज्ञान देके जग से, हमें पार उतारें॥
मन से वचन.........

ॐ ह्री श्री उपाध्याय पद परोक्ष नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यक्तित्व को जो ज्ञान से, निर्मल है बनाया।
बनते हैं उपाध्याय गुरू, सौख्य है पाया॥
मन से वचन.........

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो राह में बाधायें आयें, उनसे ना रूकें।
ले मौन साधना के धनी, कभी ना झुकें॥
मन से वचन.........

ॐ ह्री श्री साधु पद परोक्ष नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल भविष्य ध्यान से, जिसने है बनाया।
वे साधु हैं तप करके ही, सन्मार्ग को पाया॥
मन से वचन.........

ॐ ह्रीं श्री साधुपद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की वाणी आपकी, कल्याणी बन गयी।
हम पूजते हैं उनको जो, मां वाणी बन गयी॥
मन से वचन से काय की, हमें एकता मिले।
वरदान ये ही मुक्ति का, सुख फूल भी खिले॥

ॐ ह्रीं श्री जिन ध्वनि नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेद गिरी चंपा पावा, क्षेत्र को ध्याऊँ।
चरणों की वंदना करूँ, मैं ध्यान लगाऊँ॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र चैत्य पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावना बना के जो भी, चर्ण में आता।
भगवान का है भक्त वहीं, सौख्य को पाता॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

सुंदर मनोहर शांत प्रतिमा, चित्त आकर्षित करें।
औ चैत्य चैत्यालय सभी की, वंदना हम नित करें॥
मन से वचन से काया से, आर्जव धर्म को ध्यायेंगे।
वरदान ये ही मुक्ति का, सुख फूल भी खिल जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यपद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य पद और थान जितने, नमन करते हम उन्हें।
वरदान दें उत्थान दें, वे चमन कर देवें हमें॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं श्री सकलपूज्यस्थान पद नमन आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सरस सरल शुभ भाव हो, आर्जव धर्म का सार।
मन वच काया शुद्ध हो, यही भावना सार॥

चौपाई

सरल भाव समता को धारें, ऐसे गुरूवर हुये हमारे।
सरल जनम का गरल हटायें, सरल ध्यान का मार्ग बतायें॥
सरल ज्ञान है सरल ध्यान है, सरल-सरल ही जग महान् है।
बच्चे मन से सरल हैं होते, तभी सभी का प्यार भी पाते॥
सरल भाव जग में ना भटके, सरल भाव माया ना अटके।
कुटिल भाव है मायाचारी, गति तिर्यंच जायें वनचारी॥
सरल भाव से धर्म है होता, कुटिल भाव सब पुण्य को खोता।
मन वच काया एक ही रखना, तभी धर्म का स्वाद है चखना॥
कपटी प्राणी अधम बताया, गति तिर्यंच का पात्र बनाया।
एक कपट सौ झूठ बुलावे, फिर भी वह छुपने ना पावे॥
जैसा देखो वैसा बोलो, अंतर्मन के द्वारे खोलो।
सीधा मन जिसका हो जाता, सीधे मोक्षपुरी को जाता॥
दगा किसी का सगा नहीं है, देता दुख ये बंधा नहीं है।
राजनीति है मायाचारी, देता जीवन में दुख भारी॥
इससे तो बचकर ही रहना, सत्य देव का मानो कहना।
माया की छाया से बचना, जहर भरी है नाही रचना॥
उत्तम आर्जव श्रेष्ठ बताया, मायावी को नहीं सुहाया।
मुनिवर इसका पालन करते, इससे ही कर्मों को हरते॥
छल से बल से नहीं सताते, कपट नहीं करते करवाते।
आर्जव धर्म को धारण कर लो, उत्तम धर्म से मुक्ति वर लो॥

दोहा

नहिं संताप के शूल हैं, नहीं कपट के फूल।
कपट कभी करना नहीं, करी अभी तक भूल॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्रद्धा भक्ति ध्यान से, करूँ साधना देव।
पाना मुझको मुक्ति है, करूँ तुम्हारी सेव॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम सत्य धर्म पूजन

शंभू (नाम तुम्हारा......) (स्थापना)

अस्ताचल को जाता है सूर्य, त्यों प्राण पखेरू उड़ जायें।
विश्राम यदि पाना है तो, सब सत्य धर्म को अपनायें॥
सत्यम् तो शिवम् सुन्दरम् है, इसके जैसे नहिं रूपवान।
आचरण फलित हो जाये यदि, बन जाता है वह तो महान॥

दोहा

उत्तम सत्य को पालते, हैं मुनिराज महान।
उनकी पूजा हम करें, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

नाराच छंद (नीर गंध अक्षतान.....)

आत्मा ये कर्म से ही, मैली हो रही यहाँ।
जल चढ़ा के धोंवते, ये स्वच्छ होयगी कहाँ॥
सत्य धर्म सत्यज्ञान, सत्य की पूजा करूँ।
सत्यमेव जयति हो, सत्य को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि को चढ़ाते, आत्मा को ताप हैं।
दुष्ट कर्म भी हरें, ये आप का प्रताप हैं॥
सत्य धर्म सत्यज्ञान, सत्य की पूजा करूँ।
सत्यमेव जयति हो, सत्य को नमन करूँ॥

ॐ ह्री उत्तमसत्य धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है अखंड आत्मा, मैं आत्मा को ध्याऊँगा।
तंदुलों से पूजता हूँ, सिद्ध पद को पाऊँगा॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म रस को ना चखा, मैं सौख्य को ही ढूंढ़ता।
बाहरी ही गंध में, उलझ तुम्हें ना पूजता॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मात्र स्वाद के लिये, अमूल्य क्षण को खोवता।
नष्ट हो क्षुधा मेरी, मैं कष्ट में हूँ रोवता॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप हाथ में, लेकर के आप चालते।
भौतिकी ये दीप लेके, भक्त भक्ति ध्यावते॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बोधगम्य ज्ञान से ही, कर्म का किस्सा पढ़ा।
कर्म धूम भी उड़े, मैं धूप को रहा चढ़ा॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से फल मैं पाऊँगा, तो फल चढ़ाता मैं रहा।
किन्तु भाव प्रज्ञा बिना, जगत के दुख को सहा॥
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधी दौड़ दौड़ता, अहम् बढ़ा ना धर्म है।
अर्घ्य को चढ़ाऊ मैं, ध्यान आत्म मर्म है।।
सत्य धर्म.........

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सत्य समर्पण से सदा, मुक्ति का खुले द्वार।
सत्य से मुक्ति होयगी, सत्य करे उद्धार।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

क्रोध आवे तो सत्य ना बोलें, सत्य धर्म की महिमा तौले।
क्रोध रहित ही सत्य बखाना, सत्य को बारंबार प्रणामा।।

ॐ ह्रीं श्री क्रोधातिचार रहित-सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन में लोभ है आया, सत्य धर्म उसने ना पाया।
लोभ रहित यह सत्य बताया, उत्तम सत्य को शीश झुकाया।।

ॐ ह्रीं श्री लोभातिचार रहित-सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय से जब भयभीत है होता, अपने सत्य धर्म को खोता।
भय से सत्य कभी ना बोले, मुक्ति का यह द्वार ना खोले।।

ॐ ह्रीं श्री भयातिचार रहित-सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य सत्य का नाश कराता, हंसते-हंसते झूठ बुलाता।
हास्य, झूठ का त्याग कराओ, सत्य के तुम दर्शन करवाओ।।

ॐ ह्रीं श्री हास्यातिचार रहित-सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में जैसी वाणी बोले, उसको सत्य मानकर तौले।
जनपद सत्य गुरू ने गाया, सत्य धर्म बल हमको भाया।।

ॐ ह्रीं श्री जिनाज्ञालंघनातिचार रहित-सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत जनों के द्वारा स्वीकृत, सत्य नाम है उसका सम्मत।
सत्य रूप को निश्चित जानो, सत्य धर्म को तुम पहचानो॥

ॐ ह्रीं श्री जिनपद सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्र काष्ठ पाषाण की प्रतिमा, करें थापना जगती प्रतिमा।
यह स्थापना सत्य बताया, सत्य की महिमा गाने आया॥

ॐ ह्रीं श्री स्थापना सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी नाम सदा ही रखता, उसी नाम से जाना जाता।
नाम सत्य का नाम बड़ा है, सत्य आत्म के द्वार खड़ा है॥

ॐ ह्रीं श्री नाम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का ना रंग है कोई, किन्तु श्वेत श्याम है होई।
रूप सत्य इसको ही कहते, सत्य धर्म के झरने बहते॥

ॐ ह्रीं श्री रूप सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कथन अपेक्षाकृत करते हैं, कभी नहीं वो तो लड़ते हैं।
सत्य प्रतीति यही बताया, सत्य धर्म को शीश झुकाया॥

ॐ ह्रीं श्री अपेक्षा सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज पुत्र को राजा कहते, यह व्यवहार सत्य में रहते।
आगम नय की यह परिभाषा, सत्य से पूरी हो अभिलाषा॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहार सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र वसु ना उलटा करता, किन्तु शक्ति साथ में रखता।
यह संभावना सत्य कहा है, सत्य धर्म का रूप अहा है।

ॐ ह्रीं श्री सम्भावना सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वचन अपेक्षा भाव सत्य होता यहां।
भावों की शुद्धि करते हैं वे जहां॥
सत्य धर्म की पूजा करना भाव से।
आत्मिक शांति मिल जायेगी चाव से॥

ॐ ह्रीं श्री भाव सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपमा से वस्तु का रूप बतावता।
समझे जो उसको ना कष्ट सतावता।।
सत्य धर्म की पूजा करना भाव से।
आत्मिक शांति मिल जायेगी चाव से ।।

ॐ ह्रीं श्री उपमा सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस प्रकार इन सत्य भेद को जानिये।
सत्य जान के जिन आज्ञा को मानिये।।
सत्यधर्म...

ॐ ह्रीं श्री सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सत्य शिखर की ध्वजा है, सत्य शिखर की धूप।
जयमाला वर्णन करूं, सत्य का सुंदर रूप।।

शंभू छंद

जो उत्तम सत्य की गंगा में, नित ही स्नान को करते हैं।
वे प्राणी जग के दुख को हर, मुक्ति में जाकर बसते हैं।।
है सत्य शिवम् सुन्दर महान, यह सत्य ज्ञान प्रगटाया है।
है सत्य आत्म का उजियाला, आतम का रूप दिखाया है।।
जो सत्य धर्म आतम पाता, वचनों से सत्य ना पूरा हो।
सत्याणुव्रत पालन करते, शब्दों से ज्ञान अधूरा हो।।
मुनि सत्य महाव्रत ले करके, शुभ सत्य धर्म को पाते हैं।
जब सत्य सूर्य का उदय होय, तब ही मुक्ति को जाते हैं।।
संसारीजन को वाणी का, ही सत्य समझ में आता है।
समझे ना सत्य धर्म को वह, इससे ही जग भरमाता है।।
हित मित प्रिय सत्य वचन होता, वह तो कठोर ना होता है।
जब धर्म अहिंसा पालन हो, तब ही वह सत्य कहाता है।।

कब सांच को आंच ही आई है, कब सत्य किसी से डरता है।
जब सत्य समझ में आ जाये, आनंद का झरना झरता है।।
जो सत्य कहे विश्वास पात्र, बनकर सम्मान हो पाता है।
झूठा हो स्वयं जो जग में तो, वह अपमान ही पाता है।।
महिमामय है यह सत्य धर्म, शिव पथ को यह बतलाता है।
संसार झलकता सत्य-सत्य, जो सत्य ज्ञान को पाता है।।
बन करके झूठा जग में तुम, अपयश ना जग में ले लेना।
अपयश का जीवन नर्क बने, तुम सत्य की राह पे चल देना।।
इस सत्य पे पृथ्वी ठहरी है, वरना यह तो ढह जायेगी।
जब सत्य भूमि से दूर जाये, धरती पर प्रलय ही आयेगी।।
हर बात अपेक्षा से जानो, वरना असत्य हो जायेगी।
झगड़ा लड़ाई जिससे होती, जग में यह तो भटकायेगी।।
अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरू, ये उत्तम सत्य के धारी हैं।
ये पालें पालन करवाते, ये आतम स्वयं बिहारी है।।
आतम आलोकित सत्य से हो, दुख का अंधियारा दूर करे।
संकट कर्मों के नष्ट होय, मोही का मोह भी आप हरें।।
अंतरमन के है भाव गुरू, हमें सत्य की राह दिखा देना।
सम्यक् पथ पर हम गमन करें, मुक्ति में पास बुला लेना।।

दोहा

दर्पण सम चारित्र हो, ज्ञान हो दीप समान।
श्रद्धा दृढ़ संकल्प हो, 'स्वस्ति' करे प्रणाम।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्

उत्तम शौच धर्म पूजन

त्रिभंगी (स्थापना)

परिणाम की शुद्धि, ध्यान की वृद्धि, उत्तम शौच ये धर्म कहा।
वैराग्य बढ़ावे, दु:ख घटावे, आनंद कारी धर्म अहा॥
छूटी अभिलाषा, लोभ का नाशा, शौच धर्म करवाता है।
हो निर्मल भावी, सरल स्वभावी, अभिनव दर्शन करवाता है॥

दोहा

मन को अपने शुद्ध कर, शौच धर्म को धार।
शौच धर्म पूजा करूं, गुरू मूरत मनहार॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभू (अष्टक)

चिंतन न उत्तम करते हैं, बस अशुभ-अशुभ में ध्यान रहे।
मन मैला है जल ले आया, बस आतम का अब ध्यान रहे॥
अर्जन संग्रह का भाव तजूँ, यह लोभ विसर्जित हो जाये।
हम शौच धर्म पूजा करते, क्रोधादि कषायें नश जायें॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मों की शक्ति है अचिन्त्य, जो ध्याये वो ही पाता है।
नादान नासमझ रह जाता, भक्ति वाला फल पाता है॥
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ना स्वर्ग में हूँ ना नर्क में हूँ, दुख सुख जीवन की परिभाषा।
आतम बल को भूला बैठा, अब अक्षय पद की अभिलाषा॥
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के भोग मधुर लगते, पर पीछे दुख ही मिलता है।
मुरझाये फूल से गिर जाते, फिर-फिर ये फूल न खिलता है।।
अर्जन संग्रह का भाव तजूँ, यह लोभ विसर्जित हो जाये।
हम शौच धर्म पूजा करते, क्रोधादि कषायें नश जायें।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना का रस पी-पीकर के, उसमें ही उलझा रहता हूँ।
नैवेद्य चढ़ाने वाला हूँ, अब भूख मिटाने कहता हूँ।।
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमताएं, बुद्धि सद्गुण हैं, पर अंधकार में छिप जाती।
अज्ञान हरो शुभ ज्ञान ज्योति, पाकर के विकसित हो जाती।।
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म-कर्म को बुलवाते, औ पाप-पाप करवाता है।
अब पुण्य संयोग मिला हमको, पुरूषार्थ बंध हटवाता है।।
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक फल की ना चाहे मुझे, नश्वर फल का अब क्या करना।
मुक्ति फल पाने को भगवन, अब भाव सहित पूजा करना।।
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रम का अंधियारा हट जाये, श्रद्धा की उजियाली फैले।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, मुक्ति में जाकर के रह लें।।
अर्जन संग्रह........

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - **सहज प्रमाणित हो गया, मन की शुद्धि धर्म।**
वच काया शुद्धि करे, शौच धर्म का मर्म।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

छंद–भुजंगप्रयात (तर्ज–नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

स्वर्गों के सुख पाने, वांछा न करते।
क्षणिक सुख है छूटेगा, आतम विचरते॥
धरमशौच उत्तम, जगत श्रेष्ठ माना।
सुभावों से भायें, तुम्हीं जग प्रधाना॥

ॐ ह्रीं देवसुखवांछाविहीन–शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस छ्यानवै रानी, सेवायें करती।
निधियां रतन मिलके, पानी हैं भरती॥
नाहि चाहूँ निधियाँ, रतन नाही चाहूँ।
मिले सौख्य धर्मों से, मुक्ति को पाऊँ॥

ॐ ह्रीं चक्रीपद–भोगवांछाविहीन–शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने अर्द्धचक्री, सु वैभव है पाया।
मिला ज्ञान धन जो, तो वैराग्य आया॥
धरम है सहाई तो, कल्याण होगा।
धरम शौच पाकर के, मुक्ति वरेगा॥

ॐ ह्रीं नारायणपद भोगवांछाविहीन–शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर हो काया हो, नयनो को भाती।
जो काया का मोही, तो मुक्ति ना आती॥
महा काम देव की, पदवी ना चाहूँ।
मिले सौख्य धर्मों से, मुक्ति बढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं कामदेव भोगवांछाविहीन–शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

स्पर्शन इन्द्रिय सुख चाहें, जिससे भटके हैं हम राहें।
स्पर्शन इन्द्रिय सुख त्यागा, शौच धर्म से आतम जागा।।
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस रसना भी लेती रहती, बस खाने में मस्त है रहती।
रसना इन्द्रिय रस न चाहे, उत्तम शौच धर्म पथ राहे।।
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंध से हर्षित होते, इससे ही आकर्षित रहते।
अब आतम की खुशबू पाऊँ, उत्तम शौच धर्म को ध्याऊँ।।
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दरता यह चक्षु निहारे, सूरज चंदा या हों तारे।
चक्षु का अब सुख नहि पाना, उत्तम शौच धर्म को ध्याना।।
ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय भोंगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात स्वरों का राग सुहाता, इससे ही मैं जग भरमाता।
कर्णेन्द्रिय सुख आज मैं तजता, उत्तम शौच धर्म को भजता।।
ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित भोगों को भोगे, रत्नत्रय का धर्म ना योगे।
भोगों की आसक्ति त्यागूँ, उत्तम शौच धर्म को माँगू।।
ॐ ह्रीं मनवांछित भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुख पाने इच्छा करता, पर इससे भी मन ना भरता।
तन के घृणित भोग को त्यागा, उत्तम शौच धर्म मन लागा।।
ॐ ह्रीं तनसम्बन्धी भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन से प्रीति ना है नीति, संग्रह करने की है वृत्ति।
चंचल लक्ष्मी से मुँख मोड़ूँ, शौच धर्म से नाता जोड़ूँ।।
ॐ ह्रीं धनवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपवान संग में न जाये, पर मन ना डिगने ही पाये।
वनिता मोह के आप हैं त्यागी, आत्म साधना आपकी जागी।।

ॐ ह्रीं वनिता भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र मिला है आज्ञाकारी, मोह बढ़ाता है संसारी।
ममता तज समता को धारूँ, शौच धर्म पर जीवन वारूँ।।

ॐ ह्रीं पुत्र भोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनयवान भाई सुखदायी, गृहस्थी में भी शांति पायी।
भ्रातृ मोह को त्याग मैं दूँगा, शौच धर्म को धार मैं लूँगा।।

ॐ ह्रीं भ्रातसुख वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर प्रेम मित्र से होवे, दुख की सब बातें कह देवे।
मित्र मित्रता को अब त्यागा, शौच धर्म से आतम जागा।।

ॐ ह्रीं मित्रानुबन्ध वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कुटुम्ब लगता है प्यारा, प्यार के आगे सब जग हारा।
हम कुटुम्ब का मोह हटायें, शौच से आतम स्वच्छ बनायें।।

ॐ ह्रीं सकलपरिजनानुकारित्व वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

लोभ पाप का बाप है, लोभ कषाय का मूल।
उत्तम शौच को पालना, वरना पाप के शूल।।

चौपाई

उत्तम शौच धर्म बतलाया, शौच धर्म मुनिवर ने पाया।
आत्म शुद्ध कर स्वच्छ बनाये, जग से इच्छा दूर हटाये।।
अंदर बाहर पावन कीना, उत्तम धर्म तभी पा लीना।
बाह्य स्नान आत्म की शुद्धि, शौच धर्म आतम की ऋद्धि।।

राग द्वेष मिथ्यात्व हटाया, लोभ रहित यह आत्म बनाया।
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, धर्म से करली आतम शुद्धि॥
नाश गुणों का लोभ है करता, पुण्य छोड़कर पाप को भरता।
समता जल से तृष्णा धोओ, पाप हटाकर धर्म को बोओ॥
धन भोजन परिजन की वांछा, कर संकल्प नहीं आकांक्षा।
शौच धर्म से आत्म उजाला, शौच धर्म जग होय निराला॥
शौच धर्म धारी जो मुनिवर, छवि होती है उनकी मनहर।
शत-शत मुनिवर को प्रणाम है, शत-शत ऋषिवर को प्रणाम है॥
आगम पथ पर विचरण करते, मुक्ति पथ पर नित ही बढ़ते।
विजय स्वयं पर पाते हैं वे, आत्म ध्यान हर्षाते हैं वे॥
अंधकार में अमरदीप हैं, शौच धर्म पालें प्रदीप हैं।
दिव्य पुरूष हैं दिव्य तेज है, शौच धर्म से सुमन सेज है॥
उत्तम शौच है उत्तम दाता, जो लेता है मुक्ति पाता।

त्रिभंगी छंद

मन शुद्धि करता, ऋद्धि भरता, शौच धर्म निर्दोष कहा।
हम नमन हैं करते, भाव संवरते, पाते सुख आनंद अहा॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन से सारी शुद्धि हो, मन सुंदर शिव धाम।
'स्वस्ति' का शुभ धर्म हो, बारंबार प्रणाम॥

इत्याशीर्वादः

उत्तम संयम धर्म पूजन

शंभू छंद (स्थापना)

पर को वश करने में जीवन, अब तक मैंने यूं ही खोया।
खुद पर संयम ना रख पाया, संयम का बीज नहीं बोया।।
संयम मय जीवन हो जावे, बाधायें पथ में ना आयें।
उत्तम तप धारी मुनिवर जी, संयम पूजन को हम आये।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्म! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्म् अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(शेरचाल) दुनिया में जो जन्मा.....

मैं जन्म मरण जरा रोग, से ग्रसित हुआ।
यह रोग नशाने को प्रभु, जल ये ले लिया।
मन से वचन से काय से, संयम को धारूँगा।
रक्षा करूँ मैं जीवों की, निज को निहारूँगा।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप जीव को ही, नित्य सताये।
चिंता करूं संताप हो, हम पूजने आये।।
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंड आत्मा का, रूप पाऊंगा।
लेकर के शालि तंदुलों को, मैं चढ़ाऊँगा।।
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

है फूल जन्म धूल मृत्यु, करता मैं रहा।
भोगों में भूल आत्मा को, डरता मैं रहा।।
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शुद्ध अन्न खायेगा, तो शुद्ध मन रहे।
किन्तु विवेक ना रहा, तो दु:ख को सहे॥
मन से वचन से काय से, संयम को धारूँगा।
रक्षा करूँ मैं जीवों की, निज को निहारूँगा॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान दीप की शिखा, करती प्रभात है।
ये दिव्य दीप लाये हैं, मिलता सुपाथ है॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये आठ कर्म मिल के, आत्मा को कष्ट दें।
हम धूप से पूजा करें, जो भूमि अष्ट दे॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा है नहीं, बस धर्म चाहिये।
मैं फल चढ़ाता फल मिले, वरदान चाहिये॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं भक्ति के भावों से, तुम्हें पूजता प्रभो।
ये अर्घ्य की ज्योति से, तुम्हें पूजा है विभो॥
मन से वचन..........

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

असंयम अभिशाप है, संयम सुख की खान।
उत्तम संयम के धनी, करते तुम्हें प्रणाम॥

मंडलोस्परि: पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

कुआं खाई ना वे खुदवायें, पृथ्वी कायिक जीव बचायें।
एकेन्द्रिय की रक्षा करते, नहीं किसी के प्राण को हरते।।
ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवरक्षणरूपसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना छना जल काम न लेते, नदी तालाब भी नहि बनवाते।
जलकायिक जीवों की रक्षा, करने लेते हैं वे दीक्षा।।
ॐ ह्रीं जलकायिकजीवरक्षणरूपसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि जलाते कभी नहीं वे, अग्नि बुझाते कभी नहीं वे।
अग्निकायिक जीवों की रक्षा, करने लेते हैं वे दीक्षा।।
ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवरक्षणरूपसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंखा आदिक नाहीं करते, वायु जीव की रक्षा करते।
उत्तम संयम व्रत को धारा, निज आतम का यही सहारा।।
ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवरक्षणरूपसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल पत्ती को ना वे तोडें, बागादि को नाहीं मरोड़ें।
वनस्पति की रक्षा कीनी, संयम की शुद्धि कर लीनी।।
ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवरक्षणरूपसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इल्ली लट् औ केंचुआ आदि, रक्षा करते नहीं प्रमादी।
दो इन्द्रिय धारी की रक्षा, करने लेते हैं वे दीक्षा।।
ॐ ह्रीं द्विइंद्रियजीव रक्षणरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चींटी खटमल जुआं आदि, रक्षा करते नहीं प्रमादी।
त्रि इन्द्रिय जीवों की रक्षा, करने लेते हैं वे दीक्षा।।
ॐ ह्रीं त्रिन्द्रीयजीव रक्षणरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मक्खी मच्छर टिड्डी जीव, धर्म अहिंसा की है नींव।
चौ इन्द्रिय की रक्षा करते, संयम में वे चित्त को धरते।।
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रीयजीव रक्षणरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन ना है पंचेन्द्रिय होते, जलचर आदि जीव वे रहते।
पंचेन्द्रिय की रक्षा करते, संयम में वे चित्त को धरते।।
ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीव रक्षणरूपं संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव पशु नर नारक रहते, गुरूवर सबकी रक्षा करते।
संज्ञी की रक्षा कीनी है, संयम की वृत्ति लीनी है॥
ॐ ह्रीं संज्ञीपंचेन्द्रियजीव रक्षणरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद (हे मेरे वतन के....)

स्पर्शन सुख ना चाहे, गर्मी सर्दी की राहें।
वे वीतराग हितकारी, संयम के आप बिहारी॥
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय विषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रसना को वश में कीना, षट्‌रस ना पाये नवीना।
निज आत्म धर्म चमकाये, संयम का फूल खिलाये॥
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय विषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दुर्गंध सुगंध ना भेदा, चिंतन है नित्य अभेदा।
घ्राणेन्द्रिय संयम आया, भोगों ने नहीं लुभाया॥
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुंदर हो रूप किसी का, ना भटके मन ऋषियों का।
चक्षु पावन कर लीना, संयम का रस ही पीना॥
ॐ ह्रीं चक्षु इंद्रिय विषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ-अशुभ वाणी यदि होती, फिर भी समता के मोती।
कर्णों को वश में कीना, संयम मय भाव नवीना॥
ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चंचल मन को है साधा, संयम में अब ना बाधा।
मन मेरा संयम पावे, अब कहीं नहीं ये जावे।
ॐ ह्रीं मनोविषयवर्जनरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ अशुभ भाव निरवारे, सामायिक आत्म निहारें।
समता धर वंदन करते, हम पाने पूजा करते॥
ॐ ह्रीं सामायिक रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संयम को चूक जो जावे, तो प्रायश्चित वे लेवें।
फिर से संयम को पाला, कर्मों का तोड़ा जाला॥
ॐ ह्रीं छेदोपस्थापना रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो कोस बिहार करें हैं, हिंसा परिहार करे हैं।
'परिहार विशुद्धि' संयम, दर्शन से मिट जाये गम॥
ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धि रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुछ सूक्ष्म लोभ रहा है, बाकी सब कर्म बहा है।
यह सूक्ष्म सांपराय संयम, दर्शन से मिट जाये गम॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब सकल मोह को नाशा, है यथाख्यात परिभाषा।
यह संयम मुक्ति दिलाये, वरदान मुक्ति का पायें॥
ॐ ह्रीं यथाख्यातरूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **अश्व को चाबुक चाहिये, अंकुश हाथी साथ।**
इन्द्रिय पर संयम रहे, मिले मुक्ति का पाथ।

आर्या छंद (नाम तिहारा....)

संयम जीवन सुखदाई है, संयम जीवन पावन करता।
संयम अनुशासन इन्द्रिय पर, संयम बिन सावन ना झरता॥
मन चंचल है मन पापी है, मन को ही वश में करना है।
सब इन्द्रिय का राजा ये ही, मन से आतम को वरना है॥
मन साधे सब कुछ सधता है, मन छूटे से सब छूटेगा।
मन पर संयम है सर्वप्रथम, मन से बंधन सब टूटेगा॥
वाणी बस शुभ-शुभ ही बोलें, वाणी से कलियां खिलती हैं।
वाणी से होते युद्ध महा, वाणी से मिश्री घुलती है॥
खट्टी-मीठी कड़वी बोली, सब भाव प्रभावित करती है।
वाणी का संयम सौख्य करे, कालुषता वाणी हरती है॥
उत्तम है जग में मौन रहे, बोलें तो हित मित प्रिय बोलें।
उत्थान स्वपर कल्याण करें, इतने ही अपने मुख खोलें॥
संयम का पालन कीना था, प्रभु महावीर की काया ने।
तप तपते थे इस काया से, रहते थे आतम छाया में॥
काया से संयम को कर लो, काया मुक्ति ले जायेगी।

वरना भोगों की भूल तुम्हें, नर्कों में जा भटकायेगी।।
तप करने में यौवन जाये, वह तन महान हो जाता है।
काया उपकारी आतम की, आदित्य उजाला पाता है।।
संयम उपहार मिले हमको, गुरू से वरदान ये मांगेंगे।
चरणों में हमको रख लेना, कुछ और ना हम तो चाहेंगे।।
संयम की प्राची से निश्चित, शुभ सत्य का सूर्य उदित होता।
भावों में सहनशीलता धर, आदर आतम का कर लेता।।
उत्तम संयम धारक मुनिवर, संयम मय ज्ञानी ध्यानी है।
संयम से कर्म का नाश करें, संयम मुक्ति की दानी है।।
संपत्ति सुख की पावें हम, विषयों की आशा दूर भगे।
विष के समान इस जीवन में, संयम का सूर्य भी नित्य उगे।।
जब स्वाद स्वार्थ को जीता तो, आतम कल्याण का मार्ग मिले।
कथनी करनी को एक करें, आध्यात्मिक आतम फूल खिले।।
कर्मों का सृजन विसर्जन कर, संकल्प साधना को साधें।
श्रद्धान समर्पण संयम से, अपनी आतम को आराधें।।
उत्तीर्ण जगत में होयें हम, शक्ति मुझको ऐसी देना।
वरदान मुक्ति का देकर के, बाधायें सारी हर लेना।।

दोहा

अवलंबन संयम लिया, किया आत्म का ध्यान।
संयम पाकर के गुरू, करें आत्म का ज्ञान।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उत्तम संयम धारी हैं, सच्चे गुरू महान।
'स्वस्ति' भी दर्शन करे, बारंबार प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम तप धर्म पूजन

अडिल्ल (स्थापना)

तप से काया तपे, साथ आतम तपे।
मन से जप भगवान, साथ आतम जपे॥
तप के बारह भेद, जान तप कीजिये।
कुंदन सम हो खरा, मुक्ति में लीजिये॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्म! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (तर्ज : सोलह कारण)

स्वर्ण पात्र में जल ले आये, शुद्ध भाव से इसे चढ़ायें।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥
तप से सिद्धि, तप से ध्यान, तप से पायें मुक्ति महान।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को ले आये, चंदन से शीतल हो जाये।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद शुभ भाव, पार लगा दो मेरी नाव।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्मिक जीवन को पायें, भोग जगत के हमें ना भायें।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन आहार नहीं है चैन, नहि करते हैं दिन और रैन।
करें तप घोर, मुनिवर करते हैं तप घोर॥
तप से सिद्धि, तप से ध्यान, तप से पायें मुक्ति महान।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप समुन्नत करें प्रकाश, अंधकार का करता नाश।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति समर्पण भाव प्रधान, धूप चढ़ा करना विश्राम।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के फल ले आये, मुक्ति का फल है सुखदाय।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सृजन विसर्जन निश्चित जान, अर्घ्य चढ़ायें करम की हान।
करें तप घोर, मुनिवर, करते हैं तप घोर॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जीवन का यह सत्य है, बिना तपे कुछ नाहिं।
तप से फल खाने मिले, आतम शुद्धि माहिं॥

मंडलोस्परि: पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

जिनगुण सम्पत्ति को पाना, व्रत को करना सुख अभिरामा।
तप को तुम आमन्त्रित करना, तप से कर्मों को तुम हरना।।
बिना बुलाये कर्म ना आते, योगत्रय से उन्हें बुलाते।
अनुनय करने से ना जायें, तप करके ही इन्हें भगायें।।

ॐ ह्रीं जिनगुण सम्पत्तितपोधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म क्षपण व्रत मन में धारो, धारण करके त्याग संवारो।
त्याग धरम पथ हम भी चाहें, प्रभु पथ की मिलती हैं राहें।।
बिना बुलाये.........

ॐ ह्रीं कर्मक्षपण तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह समान पराक्रम वाले, कर्म से इनके पड़े हैं पाले।
सिंह निष्क्रीडित व्रत को धारा, सब कर्मों का किया किनारा।।
बिना बुलाये.........

ॐ ह्रीं सिंहनिष्क्रीडित तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वभद्र के व्रत हैं भारी, कर्मों की शक्ति है न्यारी।
तप की शक्ति को हम पायें, आतम का नित ध्यान लगायें।।
बिना बुलाये.........

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासर्वतोभद्र करेगा, जग से ही यह पार करेगा।
लाभ हानि से ये न डरते, व्रत उपवास से तप को तपते।।
बिना बुलाये.........

ॐ ह्रीं महासर्वतोभद्र तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु निष्क्रीड़ित व्रत है हारा, मुक्ति का यह बने सहारा।
अभय और संतुष्टि रखते, स्वाद रसों का कभी ना चखते।।
बिना बुलाये.........

ॐ ह्रीं लघु निष्क्रीडित तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावलि से मुक्ती पायें, यही भावना मन में भायें।
और कहीं भी भेज ना देना, चरण पास में जगह को देना।।
बिना बुलाये कर्म ना आते, योग त्रय से उन्हें बुलाते।
अनुनय करने से ना जायें, तप करके ही इन्हें भगायें।।
ॐ ह्रीं मुक्तावलि तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माह में कई उपवास हैं करते, कनकावलि के व्रत को धरते।
ना व्याकुल ना अधीर होते, शांत भाव से परीषह सहते।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं कनकावलि तपोधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सौ अनशन उन्नीस आहार, आचाम्ल व्रत का है सार।
यह उपहार हमें भी देवें, नाव हमारी गुरूवर खेवें।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं आचाम्लतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यग्दर्शन करें सुदर्शन, कर्मों का करना है घर्षण।
पाप की जड़ अभिमान को काटा, कर्मों को करते हैं टाटा।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं सुदर्शनतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुरू उत्कृष्ट तपों के धारी, पूजा हो स्वीकार हमारी।
समझ सम्हलकर कदम बढ़ायें, तप से ही मुक्ति को पायें।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं उत्कृष्टतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भूख लगे पर कम ही खाते, ऊनोदर यह तप बतलाते।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं ऊनोदर तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यह विधि मिले तो आहार लूँगा, वरना तो उपवास करूँगा।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
बिना बुलाये.........
ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसी त्याग कर आहार लेते, तन को जैसे कीमत देते।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं रसपरित्याग तपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिस आसन में बैठना चाहें, स्थिरता उसमें ही पायें।।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
काया कृश हो आनंद आता, कष्ट नहीं तप नाम को पाता।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं कायक्लेशतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
व्रत आदिक में दोष जु लगता, प्रायश्चित ले इससे भगता।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं प्रायश्चिततपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
देवागम गुरू विनय को करते, सिद्ध क्षेत्र का वंदन करते।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं विनयतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रोग थकान यदि दुख होवे, वैयावृत्ति से उसको खोवे।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवाणी को पढ़ें-पढ़ायें, स्वाध्याय से आत्म को ध्यायें।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
काय त्याग तप करते मुनिवर, कायोत्सर्ग कहा है गुरूवर।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन वच काय एक है करलो, आतम ध्यान से आतम वर लो।
स्वच्छ स्वस्थ चारित्र को पायें, निर्मल अपने भाव बनायें।।
ॐ ह्रीं ध्यानतपो धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मार्ग सहज ना सरल है, है संकल्प महान।
उत्तम तप धारी गुरू, बारंबार प्रणाम॥

चौपाई

उत्तम तप धर्मों को धारें, तप से कर्म को करो किनारे।
जीवन में जो करे तपस्या, दूर होएंगी आप समस्या॥
भव सागर से पार कराये, आतम में यह ध्यान लगाये।
तीर्थंकर ने भी तप है कीना, तभी मुक्ति को आप है लीना॥
तप जो करता तीर्थ बनाता, तीर्थ जगत के तीर ले जाता।
तप से सारी इन्द्रिय हारी, तप करवाता मन अधिकारी॥
कायर तप को ना कर सकते, तप करने से कायर डरते।
व्रत उपवास सदा ही करना, ना हो तो थोड़ा ही खाना॥
मीठा खट्ठा नमक त्याग के, एक-एक तज करो भाव से।
आसन सिद्धि को भी करना, ध्यान इसी में ही है लगना॥
पाप तपस्या से ही धोवें, पाप तपस्या से ही खोवें।
काया बिना कष्ट ना माने, बिना तपस्या आत्म ना जाने॥
गलती हो प्रायश्चित कीजे, फिर न करना मन शुद्ध कीजे।
विनयवान नत होकर रहता, गुण के वह भंडार को भरता॥
विनय करो सम्मान मिलेगा, शांति का मन फूल खिलेगा।
मन वच काया तीन विनय हैं, तीनों से ही करो सुनय हैं॥
सेवा व्याधि दूर भगावे, आतम की शुद्धि करवाये।
सेवा में ना पीछे रहना, गुरूवर की सेवा नित करना॥
जिनवाणी का पठन करोगे, गतियों का जो रूप पढ़ोगे।
तृष्णा तज संतोष आयेगा, मुक्ति का संदेश पायेगा॥

आतम तन दोनों ही भिन्न हैं, साथ रहें जैसे अभिन्न हैं।
काया तज आतम को ध्याना, तब ही सर्व सुखों को पाना॥
चिन्ता तज चिंतन को करना, ध्यायें आत्मा मुक्ति वरना।
आर्तध्यान तिर्यंच बनायें, रौद्र ध्यान नर्कों ले जाये॥
धर्म ध्यान से स्वर्ग को पाना, शुक्ल ध्यान मुक्ति का बाना।
धर्म शुक्ल आतम शुद्ध करते, कर्म नाश मुक्ति को वरते॥
एक-एक व्रत क्रम से कीजे, तब ही आनंद मुक्ति लीजे।
उत्तम तप धारी हैं मुनिवर, मूरत उनकी होती मनहर॥

दोहा

समता धन अक्षय हुआ, साथ तपस्या तेज।
कांटों के पथ पर चलें, मिले मुक्ति की सेज॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उत्तम तप धारी गुरू, दें संदेश महान।
त्याग तपस्या हम करें, बारंबार प्रणाम॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम त्याग धर्म पूजन

त्रिभंगी छंद

यह धर्म हमारा, जग से न्यारा, उत्तम त्याग बताता है।
शुभ त्याग की महिमा, त्याग की गरिमा, मुक्ति पथ दिखलाता है॥
हो मन की शुद्धि, तन की शुद्धि, पूजा करने आया हूँ।
उत्तम तप धारे, मुनि हमारे, चरण में शीश झुकाया हूँ॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (तर्ज : चौबीसी...)

भावों से धर्म करें, मन की शुद्धि हो।
मन शुद्ध आत्म हो शांत, सुंदर बुद्धि हो॥
है कठिन मोह का त्याग, जब ये हो जाये।
संसार का क्षण में नाश, मुक्ति को पायें॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सम है जिनज्ञान, शीतलता देवे।
चंदन से पूजूँ नाथ, ताप को हर लेवे॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद करके ध्यान, अक्षत ले आया।
अक्षय आतम के काज, पूजा को आया॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की भूख मिटे, तृप्ति ना पाई।
पुष्पों से पूजूं नाथ, सद्बुद्धि आई॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना रस का है स्वाद, स्वारथ इन्द्रिय का।
नैवेद्य समर्पित आज, स्वारथ आतम का॥
है कठिन मोह का त्याग, जब ये हो जाये।
संसार का क्षण में नाश, मुक्ति को पायें॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नोंमय दीपक नाथ, जग का तम हरता।
दो ज्ञान दीप परमार्थ, मुक्ति को वरता॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आंधी आये, तबियत घबराती।
कर्मों की धूम उड़े, शांति छा जाती॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार सरस फल खायें, स्वाद बड़ा आता।
मुक्ति फल का ना स्वाद, मुझको है भाता॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा आकाश समान, पूरी ना होती।
अर्घ्यों का लायें थाल, ज्ञान मिले मोती॥
है कठिन........

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

त्याग धर्म ही जगत लगावे पार है।
त्याग धर्म ही निश्चय से भव पार है॥
उत्तम त्याग धरम धारी गुरू हैं कहे।
मन वच तन ये ध्याऊं, चरण में हम रहें॥

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

भुजंग प्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

ममता नहीं तन से, सुंदर घने हैं।
बने काम देव ना उसमें सने हैं।।
पुद्‌गल को जान के, ममता है त्यागी।
करें प्रीति आतम से बनके विरागी।।
ॐ ह्रीं तन ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम देती माता, तो ममता भी होती।
बड़े कष्ट सहकर के, पालन वो करती।।
परन्तु वे माता की, ममता भी त्यागें।
करें प्रीति आतम से, बनते हैं विरागे।।
ॐ ह्रीं जननी ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिता प्यार देते और पालन भी करते।
जरा कष्ट होता तो, पलभर में हरते।।
किया ध्यान आतम का, पुद्‌गल को जाना।
नहीं कोई मेरा, जगत है बेगाना।।
ॐ ह्रीं पितृ ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र मिला पुण्य से, आज्ञाकारी।
सेवा भी करता, बने ना बीमारी।।
किया भेद विज्ञान चेतन को जाना।
ये मंजिल नहीं मेरी, मुक्ति को जाना।।
ॐ ह्रीं पुत्र ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा बने राज्य को भी चलाया।
अपनत्व से सेवा, भाव बनाया।।
लेते जो दीक्षा, तो राज्य भी छोड़ा।
नहि मोह रहता, जो ममता को तोड़ा।।
ॐ ह्रीं राज्य ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोना ना चांदी, रतन जोड़ रक्खा।
गाड़ी व महलों का, भी स्वाद चक्खा।।
वैराग्य आये तो तृण सम है छोड़ा।
औ दीक्षा को ले, नाता निज से है जोड़ा।।
ॐ ह्रीं धनवाहनादि ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुन्दर सुशीला मिली ज्ञान नारी।
उसको भी तजकर बने निर्विकारी।।
मुक्ति में जाने का भाव बनाया।
समर्पित मेरा मन, मैं शीश झुकाया।।
ॐ ह्रीं स्त्री ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सांकल में जैसे वे कड़िया हैं रहती।
वैसे ही जग में कुंटुम्बी भी रहते।।
रिश्तों की सांकल को एकदम से तोड़ा।
बनेंगे जिनेश्वर, यही भाव जोड़ा।।
ॐ ह्रीं गृह कुटुम्ब ममत्वत्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चारों कषायों की नागिन है डसती।
चढ़ता जहर जब तो बदली बरसती।।
तज कर कषायों को, सम्यक्त्व धारा।
बने हैं निर्मोही, मिला है किनारा।।
ॐ ह्रीं कषायभाव त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुंदर हो वस्तु, सरागी बने हैं।
नहीं मन में भायी, तो द्वेषी घने हैं।।
यही राग द्वेषा ना चित्त विकारा।
बने वीतरागी, मिला है किनारा।।
ॐ ह्रीं रागद्वेष त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माता पिता नारी तज राग द्वेषा।
नहि धान्य धन जग में कोई विशेषा।।
सान्निध्य गुरूवर हम पायें तुम्हारा।
आये शरण हम मिलेगा किनारा।।
ॐ ह्रीं ममत्व त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मात्र आत्मा है मेरा, बाकी तज संसार।
क्या ले करके आया था, है क्या जग में सार।।

बेसरी छंद

उत्तम त्याग करें मुनिराजा, उत्तम आतम के हित काजा।
उत्तम त्याग मुक्ति ले जावे, सिद्ध शिला में जायें विराजे।।
रागद्वेष को आप निवारें, ऐसे हैं गुरूदेव हमारे।
धन का मोह त्याग कर दीना, आत्म ध्यान ध्या आतम चीना।।
भेदज्ञान जब हो जाता है, सद्गुरू के दर्शन पाता है।
फिर वैराग्य की आंधी आई, रागद्वेष की करी सफाई।।
ममता तज समता को पाया, उत्तमत्याग का भाव बनाया।
महावीर के पदचिन्हों पर, बढ़ते कदम उन्हीं के पथ पर।।
योग परीक्षा भी करते हैं, किन्तु त्याग इच्छा रखते हैं।
त्याग धर्म रस्ता दिखलाता, त्याग धर्म वैराग्य बढ़ाता।।
क्रोध मान माया को छोड़ा, लोभ ने तुमसे नाता तोड़ा।
पुद्गल वस्तु सब तज दीनी, उनमें ना फिर ममता कीनी।
पिता पुत्र या फिर हो नारी, सर्व कुटुंबी हैं संसारी।
आया अकेला जाऊं अकेला, सारा जग दो दिन का मेला।।

रागद्वेष संसार बढ़ाये, मोह आत्म को जगत घुमाये।
जग के बंधन हैं दुखदाई, निज की परिणति है सुखदाई।।
त्याग बिना जग सत्य ना दीखे, त्याग बिना संयम ना सीखे।
त्याग धर्म मुक्ति की सीढ़ी, त्याग धर्म जिनवर की पीढ़ी।।
त्याग से अपना नाता जोड़ो, संग्रह वृत्ति मन से छोड़ो।
पाप ताप संताप मिटाये, शिक्षा दे उपदेश सुनाये।।
मन में जो संतोष है रखता, वह ही शांति का सुख चखता।
जन्म मरण के तोड़े बंधन, ऐसे हैं त्रिशला के नंदन।।
हे भगवान त्याग न छूटे, नाता ना तेरे दर से टूटे।
त्यागी सेवा त्याग बढ़ाये, तन में शान्ति मन हर्षाये।।
इक दिन मैं भी सब कुछ त्यागूँ, धार दिगम्बर बनूँ मैं साधू।
चिन्ताओं से दूर रहूँगा, बाईस परीषह साथ सहूँगा।।
नहीं डिगूँगा पद से अपने, ना देखूँ भोगों के सपने।
त्यागी गुरूवर आशीष देना, अपने चरणों में रख लेना।।

दोहा

छोड़ के एक दिन जाऊँगा, राग बाग परिवार।
जीवित रहते ही तजूँ, यही भाव आधार।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उत्तम त्याग को धारकर, ले लूँगा सन्यास।
'स्वस्ति' की है भावना, मुक्ति में हो वास।।

इत्याशीर्वाद:

उत्तम आकिंचन धर्म पूजन

त्रिभंगी छंद (स्थापना)

परिग्रह की छाया, कर्म की माया, जीवों को भटकाती है।
आतम की निधियां, धर्म की विधियां, जान के मुक्ति पाते हैं॥
उत्तम आकिंचन, धर्म का सिंचन, गुण बगिया खिल जायेगी।
प्रभु पूजा तेरी, कर्म की फेरी, तोड़ मुक्ति भिजवायेगी॥

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहवाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं

अष्टक छंद (सोलह कारण)

जल से मल का हो परिहार, जल से पूजन का व्यवहार।
करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम॥
भूख प्यास तन की हो दूर, सब ही धर्म करें भरपूर।
करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शीतल नहीं है ताप, मिट जाये मेरा संताप।
करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय चंदंन निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत लेकर आये, चरण चढ़ा मुक्ति को पाये।
करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ा पाऊं उत्साह, मुक्ति पथ की मिलेगी राह।
करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय पुष्पं निर्ववामीति स्वाहा।

मन चाहा यह दे वरदान, पावेगा जग मुक्ति निधान।।

करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम हरने दीपक ले आये, सब अज्ञान मेरा हर जाये।

करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम।।

भूख प्यास तन की हो दूर, सब ही धर्म करें भरपूर।

करूँ प्रणाम, उत्तम धर्म को, करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित कर्मों का है बंध, धूप चढ़ा होऊं निर्द्वन्द।

करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वृक्षों के फल फूल हैं खाऐं, अब मुक्ति का फल मिल जाये।

करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मरते जीते जीवन जाऐं, पद अनर्घ्य की आश लगाऐं।।

करूँ प्रणाम........

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सृष्टि का सृष्टा नहीं, कर्म का है संयोग।

आकिंचन शुभ धर्म को, नित्य नमहूँ त्रियोग।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

शंभू छंद

जग सारा घूम चुका प्रभुवर, पर अपना कोई नहीं पाया।
दुख का सागर संसार है ये, सुख क्षण भर चैन नहीं पाया।।
उत्तम आकिंचन धर्म प्रभो, जो धारेगा सुख पायेगा।
घर द्वार तजूँ परिवार तजूँ, मुक्ति द्वारा खुल जायेगा।।
ॐ ह्रीं अनित्यरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कालबलि लेने आये, तब कोई बचा ना पायेगा।
हो तंत्र मंत्र या वैद्य कोई, उस समय काम ना आयेगा।।
भगवान शरण में आया हूँ, सच्ची शरणा को पाया हूँ।
उत्तम आकिंचन धर्म मिले, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।
ॐ ह्रीं शरणरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जन्म मरण करके हारा, पर अंत नहीं इसका आया।
दुख सागर में गोते खाता, सच्चा जिन धर्म नहीं पाया।।
संसार संसरण का स्थल, इससे मुक्ती को पाना है।
उत्तम आकिंचन को प्राप्त करूँ, फिर नहीं कहीं पर जाना है।
ॐ ह्रीं संसाररूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नरक गति तिर्यंच गति, सुर मानुष तन को पाया है।
चारों गतियों में जीव एक, बस पुण्य पाप फल पाया है।।
तन धन परिजन ना साथ जायें, बस कर्म जगत में चलता है।
उत्तम आकिंचन धर्म मिले, तो मुक्ति पथ भी मिलता है।।
ॐ ह्रीं एकत्वरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब द्रव्य हैं भिन्न-भिन्न, ये नीर क्षीर सम अलग रहे।
फिर भी मैं अपना मान रहा, इसलिये कष्ट के वार सहे।।
जड़ चेतन को मैं जान-जान, निज आतम को पहचानूँगा।
उत्तम आकिंचन धर्म धार, सच्चे मारग में चालूँगा।।
ॐ ह्रीं अन्यत्वरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन के अंदर है मैल भरा, हर क्षण मल बहता नव द्वारा।
इसके अंदर है महाशुद्ध, मम चेतन सबसे है प्यारा।।
रत्नत्रय से पावन करके, तन मन को शुद्ध बनाऊँगा।
उत्तम आकिंचन व्रत धारूँ, आतम को शुद्ध बनाऊँगा।।
ॐ ह्रीं अशुचिरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मिथ्यात्व कषायें योग तीन, आस्रव कर्मों का करते हैं।
मुनि इनको तज कर्मों के द्वार, आने का बंद वे करते हैं।।
दुर्भाव त्याग सद्भाव धरूँ, ऐसी परिणति मेरी होवे।
उत्तम आकिंचन धर्म धार, कर्मों को तज मुक्ति जावे।।
ॐ ह्रीं आस्रवत्यागरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब रागद्वेष तज वीतराग, भावों को मन से भाऊँगा।
जग से विरक्त वैराग्य भाव, तब संवर तत्व को पाऊँगा।।
ले पंच महाव्रत तप धरके, आतम का ध्यान लगाऊँगा।
मेरे जिनवर को नमस्कार, उन सम बनने मैं आऊँगा।।
ॐ ह्रीं संवररूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यह पुण्य पाप दोनों ही कर्म, शुभ-अशुभ रूप परिणाते हैं।
इनमें जो भी उलझा आकर, अपना संसार बढ़ाते हैं।।
है वीतराग है शुद्ध भाव, निर्जरा कर्म की करते हैं।
उत्तम भावों से मुनिवर के, चरणों में शीश को धरते हैं।।
ॐ ह्रीं निर्जरारूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रिलोक को पुरूषाकर कहा, भ्रमते रहते हैं जीव यहां।
चारों गतियों के चक्कर में, रह जीव कहें अब जायें कहां।।
इसका स्वरूप लख आत्मजान, कल्याण पथिक अब बन जाओ।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, करके प्रभु चरणों में आओ।।
ॐ ह्रीं लोकरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वस्तु स्वभाव को धर्म कहा, रत्नत्रय धर्म बताया है।
दशधर्म दान चऊं धर्म कहा, जो धर्म धरे हर्षाया है।।
यह धर्म नाव बन पार करे, निज धर्म शरण में आ जाना।
धर्मों में उत्तम धर्म यही, मुक्ति का यह पथ अंजाना।।
ॐ ह्रीं धर्मरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्लभ है मानुष का तन यह, दुर्लभ है जिन कुल का पाना।
दुर्लभ है सच्चा ज्ञान मिले, दुर्लभ है संयम अपनाना।।
दुर्लभ बोधि जब पावेंगे, सहजानंदी का रूप लखूँ।
आकिंचन धर्म को धारण कर, निज निजानंद का स्वाद चखूँ।।
ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभरूपोत्तम-आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुत मात-पिता तिरिया बहना, भाई आदि और दास दासी।
यह चेतन परिग्रह कहलाया, तजना ही मुक्ति की राशि।।
मृत्यु उपरांत ये छूटेंगे, इससे पहले मैं छोड़ूँगा।
उत्तम आकिंचन धर्म धार, जग से मैं मुख को मोड़ूँगा।।
ॐ ह्रीं चेतनरूपबाह्य परित्यागाकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ये महल अटारी कांच कनक, औ महल बाग अरू गांव खेत।
निर्जीव परिग्रह इसे कहा, तजता तो सुख मिलता समेत।।
जड़-जड़ है चेतन-चेतन है, इक दूजे के ना हो सकते।
इनसे अपना नाता तोड़ूँ, आतम में आतम को भजते।।
ॐ ह्रीं अचेतनरूपबाह्यपरिग्रह त्यागाकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बाहर तो सारा तज दीना, अंतर के राग अरू द्वेष तजे।
जब तक इनका निज वास रहे, तब तक ना आतम राम भजे।।
यह राग द्वेष दोनों तजकर, आतम को शुद्ध बनाऊँगा।
आकिंचन धर्म के धारी गुरू, मुक्ति पाने मैं आऊँगा।।
ॐ ह्रीं अंतरंग परिग्रहत्यागाकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर वेष दिगम्बर रूप अहा, अब नेह देह का त्याग दिया।
दुविधा सुविधा से दूर रहे, बस आत्म ध्यान को ध्याये जिया।।
किंचित भावों का मैल नहीं, आतम की शुद्धि कर दीनी।
उत्तम आकिंचन धार गुरू, तप से मुक्ति को पा लीनी।।
ॐ ह्रीं विविधपरिग्रह त्यागाकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

किंचित परिग्रह लेश ना, शुद्ध हुये गुरू आप।
भावों से पूजा करूँ, हरो कर्म का ताप॥

चौपाई

आकिंचन शुभ धर्म है प्यारा, इससे पाये जगत किनारा।
आकिंचन का पालन करना, शुद्ध भाव को मन में धरना॥
लोभी जन यह धर्म ना पावें, दूर-दूर वह शीघ्रहि जावें।
अभिलाषा बढ़ती ही जायें, इच्छा जग में जाल बिछाये॥
संग्रह में आनंद मनावे, परिग्रहानंदी बन इतरावे।
शाश्वत आतम को ना जाने, भौतिकता में ही सुख माने॥
इच्छाओं का अंत नहीं है, उनका मुक्ति पंथ नहीं है।
नित संकल्प विकल्प को करते, किन्तु ना परिग्रह को तजते॥
श्री जिनवर की शरण में आओ, सर्वप्रथम सद्बुद्धि पाओ।
आकिंचन जो धर्म को धारे, वह ही आतम रूप सम्हारे॥
जड़ चेतन का भेद जो जाने, वह ही सत्य धर्म को माने।
सत्य आत्मा सत्य ज्ञान है, सत्य ही आतम गुण महान है॥
परिग्रह आवे परिग्रह जावे, समता में यह मन रम जावे।
धीरे-धीरे वांछा छोड़ों, परिग्रह से मुख को ही मोड़ो॥
फिर दीक्षा का भाव बनाओ, गुरूवर के चरणों में जाओ।
पूर्ण परिग्रह त्यागी गुरूवर, आकिंचन व्रत धारी गुरूवर।
वीतरागता रूप सुहाना, आकिंचन पा इसको जाना॥
आतम रक्षक ज्ञान हमारा, भव सिंधू से करें किनारा।
आकिंचन बिन मुक्ति ना जावे, आकिंचन को मुक्ति भावे॥
उत्तम धर्म को शीश झुकाता, सुख पाने शुभ भाव बनाता।

दोहा

चार गति में घूमकर, पाया दुःख अपार।
आकिंचन धारी गुरू, करें हमें भव पार॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पाप पुण्य दोनों तजूँ, दोनों दें संसार।
सत्य ज्ञान पाकर प्रभो, होऊँ भव से पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजन

गीता छंद (स्थापना)

जो ब्रह्म में चर्या करें, वे ब्रह्म बनने के लिये।
निज ब्रह्म का लेते सहारा, कर्म हरने के लिये॥
तब आत्म शक्ति जागती, औ कामनायें ना रहें।
ध्यान में आनंद आता, कर्म के दुख क्यों सहें॥

दोहा

ब्रह्मचर्य उत्तम धरम, आनंद का भंडार।
मंदिर में ज्यों कलश है, यही धर्म का सार॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (शंभू छंद)

हर रोज सफाई करता हूँ, पर मन मैला रह जाता है।
मन मैला है तन उजला है, मन पापों में भरमाता है॥
अंतर्मन शुद्धि के कारण, जल लेकर चरणों में आये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्पित है जीवन चरणों में, संसार ताप नाशों स्वामी।
भक्तों की व्यथा को सुन करके, दुखड़े मेटो अंतर्यामी॥
चंदन से चरचूँ नाथ चरण, शीतल चंदन लेकर आये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं संसारी तुम मुक्त प्रभो, अक्षय जीवन है नाथ तेरा।
पग-पग पर मेरा क्षय होता, अब कष्ट हरो हे नाथ मेरा॥
मोती से अक्षत लेकर के, भावों के पुंज को हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध लुभाती है, वैसे ही भोगों में डूबा।
भोगों ने आफत कर डाली, भोगों से मन मेरा ऊबा॥
हो कामनाओं का ध्वंस प्रभो, यह पुष्प चरण में हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का भोजन हम करते हैं, आनंद अमृत तुम पीते हो।
मम पेट सदा खाली रहता, पर तुम प्रभो तृप्ति पाते हो॥
यह क्षुधारोग की शांति हो, नैवेद्य भावना है लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीवाली दीपक से होती, पर मन का दीप नहीं जलता।
अज्ञान अंधेरा छाया है, उजियाले से ही यह डरता॥
बिन ज्ञान जगत ना घूमूँ अब, यह दीपक लेकर हैं आये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने भटकाया जग में, अब शरण तिहारी आऊँगा।
अवगुण की धूप बना करके, तप अग्नि में मैं खेऊँगा॥
सब धूम करम की उड़ जावे, यह भाव साथ में हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरूषार्थ संग फल की इच्छा, ले करके कारज करता हूँ॥
मुक्ति का पुरूषारथ नाहीं, इसलिये कष्ट ये भरता हूँ।
उद्धार जगत से हो जाये, फल पाने फल को हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इक ज्योति जगायी थी मन में, उस ज्योति ने निज ध्यान किया।
अर्घ्यों की ज्योति जगमग है, मुक्ति पथ जिसने सरल किया॥
भवसागर से अब पार होयें, अर्घ्यों की थाली हैं लाये।
हो ब्रह्मचर्य की शक्ति प्राप्त, अर्जी चरणों में ले आये॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शुद्ध-शुद्ध हो भाव जब, ब्रह्मचर्य व्रत धार।
ब्रह्मचर्य की शक्ति से, सर्व कर्म निरवार॥

मंडलोस्परि: पुष्पांजलिं

प्रत्येक अर्घ्य

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन....)

उत्तम गुण शील के धारी, आतम रक्षा हितकारी।
स्त्री से नाता तोड़ा, भोगों से मुख को मोड़ा॥
ॐ ह्रीं स्त्री सहवास वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं
नारी तन को ना देखे, शुभ आतम भाव में लेखे।
वे शील धर्म के धारी, वे रक्षा करें हमारी॥
ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं
वाणी ना राग की बोलें, हर पल मन को वे तौलें।
वाणी से शील को पालें, ऐसे गुरू हैं रखवाले॥
ॐ ह्रीं रागवचनवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं
चिन्ता ना भोग की करते, पूरब को याद ना रखते।
मन वच काया से त्यागा, जीवन आतम से जागा॥
ॐ ह्रीं भोगानुस्मरणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं
षट्रस गरिष्ठ को त्यागा, इससे अब्रह्म ना जागा।
संयम रख आहार लेते, कुछ नाही किसी से कहते॥
ॐ ह्रीं वृष्येष्ट रस वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

तन की सज्जा नहि करते, श्रृंगार में ध्यान ना धरते।
आतम श्रृंगारित कीना, निज की शुद्धि कर लीना॥
ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्कारवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

स्त्री शैय्या ना लेते, भूमि में शयन ही करते।
ना स्वप्न में दोष लगाते, उत्तम व्रत धारी कहाते॥
ॐ ह्रीं स्त्रीशय्यासनवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

वे काम कथा न करते, वचनों की शुद्धि धरते।
है धर्म कथा सुखकारी, कष्टों की है परिहारी॥
ॐ ह्रीं कामकथावर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

वे भूख से कम ही खावें, वे ज्ञान में चित्त रमावें।
व्रत रक्षा करें हमारी, हम आये शरण तुम्हारी॥
ॐ ह्रीं उदरपूर्णाशनवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

नवधा व्रत पालन करते, तप से कर्मों को हरते।
वे राग द्वेष निरवारी, गुरू रक्षा करो हमारी॥
ॐ ह्रीं नवधाशीलपालनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

तन का शोषण हैं करते, आतम का पोषण करते।
वे दुष्ट काम वश करते, आतम से आतम वरते॥
ॐ ह्रीं शोषणकामवाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

संताप काम का हारा, भोगों से किया किनारा।
निश्चित हो ध्यान की सिद्धि, गुरूवर पाते हैं ऋद्धि॥
ॐ ह्रीं संतापकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

जो काम का है उच्चाटन, उसका भी किया है पाटन।
ध्यानी बन ध्यान को ध्याया, कर्मों का किया सफाया॥
ॐ ह्रीं उच्चाटनकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

चौपाई

वशीकरण इन पर ना चलता, काम बाण इनको ना लगता।
आत्म शक्ति से निज वश कीना, त्याग तपस्या में मन लीना॥
ॐ ह्रीं वशीकरणकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

भोगी काम में सुध-बुध खोवे, मोहन मन वश में ना होवे।
किन्तु आप बलवान हो योद्धा, आत्मध्यान से बने हो बौद्धा॥
ॐ ह्रीं मोहनकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

पंच बाण से रहित हो गुरूवर, आत्मध्यान से सहित हो गुरूवर।
जो भी तेरा ध्यान लगाये, दूर होंय सारी बाधायें॥
ॐ ह्रीं पंचप्रकारकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

स्वर्ग अप्सरा यदि लुभाएं, किन्तु आपको रूप ना भाएं।
आत्म रूप आपहि मन भाया, सुंदर लगती नहीं है काया॥
ॐ ह्रीं रूपकनकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

बार-बार सित तिये निहारे, किन्तु जरा ना आप विचारे।
बार-बार बस शास्त्र को पढ़ते, पढ़-पढ़ मुक्ति पथ पर बढ़ते॥
ॐ ह्रीं अवलोकन कामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

हंसी में भी ना कुवचन बोलें, सुंदर शब्दों में मन डोले।
हित मित प्रिय वाणी हैं गुरूवर, शांति देने वाले तरूवर॥
ॐ ह्रीं हास्य कामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

चेष्टा ना वे अशुभ की करते, काम इशारा नहीं वे करते।
करे इशारा मुक्ति पथ का, बनी आस्था मोक्ष पथिक का॥
ॐ ह्रीं इंगितचेष्टा वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

अधिक काम हो मृत्यु होवे, आप शुद्ध आतम को ध्यावें।
ऐसे गुरूवर हुए हमारे, हमें शुद्ध कर देय सहारे॥
ॐ ह्रीं मारणकामबाणवर्जनोत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

सुंदर सुखमय धर्म हमारा, शुद्ध आचरण ज्ञान किनारा।
ब्रह्मचर्य की रक्षा करना, ऐसे धर्म की शरण को वरना॥
ॐ ह्रीं शुद्ध ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं

दोहा

ब्रह्म समय में ब्रह्म का, ध्यान करूँ दिन रैन।
ब्रह्मचर्य से आत्म में, आता है सुख चैन॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं

जयमाला

दोहा

ब्रह्मचर्य की शक्ति ही, ले जावे भव पार।
नमन करूँ मैं भाव से, यही भाव आधार॥

पद्धरि छंद

उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वे ही गुरूवर होंय हमारे।
अंतर वाह्य परिग्रह त्यागा, काम भाव तन मन से भागा॥
कर्मों के मल को नित धोते, आत्म ध्यान का बीज भी बोते।
अष्ट मूल गुण पालन हारी, भोगों के नहिं आप भिखारी॥
रागी रात्रि में जब सोवे, रागी राग में गोता खावे।
राग त्याग मुनि ध्यान लीन हैं, तत्व ज्ञान में वे प्रवीन हैं॥
समता धर ममता दूर करें, बाइस परीषह को आप सहें।
ये शील महाव्रत पाल रहे, औरों को भी उपदेश दिये।
शुभ ब्रह्मचर्य सुखकारी है, आतम का यह उपकारी है॥
मन शुद्ध रखें तब ध्यान होय, मन शुद्धि सम्यग्ज्ञान होय।
जब ब्रह्मचर्य मन आयेगा, तब ही मुक्ति फल पायेगा॥
सीता ने शील निभाया था, अग्नि का नीर बनाया था।
जब सेठ सुदर्शन शूली पर, शूली का सिंहासन ऊपर।
द्रौपदी का चीर बढ़ाया था, कीचक को मार भगाया था॥
मन वच काया से धारोगे, संयम से कर्म निवारोगे।
कांटा भी निश्चित फूल बने, संकट क्षण भर में सर्व हने॥
सागर की लहरें पार करें, दुःखों के पर्वत आप हरें।
जो ब्रह्मचर्य पालन करता, आफत भी सबकी है हरता॥

अपनी शक्ति को पहचानों, फिर ब्रह्मचर्य व्रत को ठानो।
यह स्वर्ग मोक्ष फलदायी है, जीवों का यही सहाई है।।
मंदिर का यह ही कलशा है, आतम का सुन्दर जलसा है।
जो ब्रह्मचर्य को धारेगा, आतम का रूप निहारेगा।।
इससे सुन्दर है रूप नहीं, इससे सुन्दर ना ज्ञान सही।
'स्वस्ति' को शक्ति दे देना, चरणों में अपने रख लेना।।

दोहा

ब्रह्म पति हो ब्रह्म से, बने ब्रह्म भगवान।
ब्रह्मचर्य धारी प्रभो, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आत्म ध्यान की लालसा, पूर्ण करो भगवान।
आशीष आपका चाहिये, बारंबार प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद:

सम्पूर्ण जयमाला

दोहा

दश धर्मों के फूल से, महके सब संसार।
जयमाला वर्णन करूँ, मिले मुक्ति का द्वार।।

शेरचाल (दे दी हमें आजादी...)

उत्तम धरम क्षमा को लिया, जो हृदय में धार।
तज क्रोध को तज द्वेष को, शांति मिली अपार।।
ज्ञानी तो ज्ञान में सदा ही, मन को लगाये।
उपसर्ग करे कोई भी पर, चित ना डिगाये।।1।।

उत्तम धरम है मार्दव, ये मान को हरता।
हो रूप चाहे ज्ञान हो पर, मान ना करता।।
ये मान आदमी को नर्क, राह दिखाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।2।।
मन से वचन से काय से जो, एक ना रहता।
भावों में कुटिलता रहे, माया में वो बहता।।
ये माया आदमी को, पशुवत् है बनाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।3।।
सच्चा है सत्य धर्म, सत्य रूप दिखाया।
वैभव है आत्मा का क्या, स्वरूप बताय।।
यह सत्य धर्म सूर्य सा, स्पष्ट दिखाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं मैं, शीश झुकाता।।4।।
मन से मलिन है आत्मा को शुद्ध बनाये।
यह शौच धर्म, लोभ हटा, सच को दिखाये।।
यह शौच धर्म, आत्मा से कर्म हटाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।5।।
वश में किया है इन्द्रियों को, भोग न करते।
रक्षा करें वे प्राणियों की, प्राण ना हरते।।
संयम के भाव पालने के, भाव बनाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।6।।
अग्नि समान तप किया है, कर्म जलाये।
कर्मों के बंध तोड़ने को, ध्यान लगाये।।
जो भी करेगा तप तो वही, मुक्ति को पाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।7।।
अर्जन का विसर्जन करो, ये त्याग सिखाता।
संग्रह किया वो भार है, जग में है भ्रमाता।।
मैं सर्व परिग्रह दूँ त्याग, भाव बनाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।8।।

अन्दर से नग्न बाह्य नग्न, त्याग सब दिया।
चित में नहीं है कुछ रहा, बस ध्यान ध्या लिया।
उत्तम धरम हमारा है मैं पाने को आता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।9।।
गुरू ब्रह्म में चर्या करें, वे ब्रह्मचारी हैं।
संसार की सब शक्तियां, उनसे ही हारी हैं।।
निज आत्म शक्ति पाने के, मैं भाव जगाता।
उत्तम गुरू हमारे हैं, मैं शीश झुकाता।।10।।
दशधर्म की माला बना, धारूँगा हृदय में।
औषध मिली है धर्म की, पिऊँगा हृदय से।।
अमृत समान धर्म, अमरता को है देते।
जो पालता है वे ही सौख्य, मुक्ति का लेते।।

दोहा

और नहीं कुछ भावना, पाऊँ मैं दश धर्म।
दश धर्मों के मर्म से, छूटें सारे कर्म।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय नमः सम्पूर्णार्घ्यं नि.

(यहां पर श्रीफल चढ़ायें)

दोहा

पूजा कीनी भाव से, लिया धर्म आधार।
'स्वस्ति' की है भावना, उतरें भव से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दशलक्षण व्रत विधि

दशलक्षण व्रत विधि के अनुसार करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। उत्तम विधि दस दिन तक निर्जल उपवास है। मध्यम विधि जल लेकर है तथा जघन्य विधि दूध आदि लेकर किया जाता है उत्तम धर्म उत्तम फल के प्रदाता हैं।

प्रशस्ति

चौपाई

दश धर्मों का बाग है सुंदर, इन्हें सजा लो अपने अंदर।
तन मन जीवन का महकेगा, कर्म धूल सारी हर लेगा॥
क्षमा क्रोध से दूर करेगा, मार्दव मन का मान हरेगा।
आर्जव सीधी चाल बनाता, सत्य ज्ञान का रूप दिखाता॥
शौच लोभ को दूर भगाये, संयम आतम स्वस्थ बनाये।
तप से अपना नाता जोड़ो, त्याग से ना तुम मुख को मोड़ो॥
आकिंचन का पालन करना, ब्रह्मचर्य को धारण करना।
दश धर्मों का करो आचरण, आतम का हो जाये जागरण॥
आतम का दर्शन करवाये, आतम आनंद पा हर्षाये।
जिसने भी यह धारण कीना, अव्यय आतम को पा लीना॥
दशलक्षण का पर्व जो आये, एक-एक दिन इक पूज रचाये।
अध्यात्मिक यह पर्व बताया, आतम की शुद्धि करवाया॥
वर्ष में तीन बार यह आये, रत्नत्रय उपहार दिलाये।
माघ भादो वैशाख सुदी में, बरसे अमृत धर्म नदी में॥
भादों में बहु करें करायें, बाकी को जन भूल ही जायें।
उमड़े श्रद्धा दशलक्षण में, अपने आतम के रक्षण में॥
त्याग तपस्या मन से करते, संचित पुण्य वृद्धि को करते।
हमने भी शुभ भाव बनाया, दशलक्षण का पाठ रचाया॥
ज्वालापुर नगरी है प्यारी, हरिद्धार की भक्ति न्यारी।
माघ वदी ग्यारस जब आई, पाठ रचा होता सुखदाई॥
माघ सुदी चौदस थी प्यारी, रचना पूर्ण हुई सुखकारी॥
दो हजार सन् पांच हुआ है, शुभ भावों को बना लिया है।
पर स्वभाव तज निज पद आऊँ, नित चरणों में शीश झुकाऊँ।
'स्वस्ति' को प्रभु आशीष देना, अपने चरणों में रख लेना॥

ऊँ नमः सिद्धेभ्यः ।

आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी के पावन चरणों में कोटि-कोटि वन्दामि

भावांजली

तेरी कृपा से हे माँ जीवन बदल गया है।
तेरी दया से हे माँ जीवन सुधर गया है।।

सब देखते थे मुझको, मैं देखता था उनको।
मैने बताया उन्को, यह माँ की ही कृपा है।।

मेरा रोग शोक भागा, मेरा क्रोध मान भागा।
मेरा लोभ भी है भागा, मेरी माया भी है भागी।।

चारों कषायें जैसे, छूमन्तर हो गयी हैं।
इनके पलायन से ही, जीवन सुघर गया है।।

तेरे चरण कमल माँ, मुझे मुक्ति पथ दिखाते।
जो करता नमन इनको, मिलता उन्हें चमन है।।

जिस पथ पे आप चली हैं, उन पथ में मैं चलूँगा।
और आपकी कृपा से, भव सिन्धु को तिरूँगा।।

मैं आपका ही हूँ माँ, और आपका ही रहूँगा।
जब तक न मिले मुक्ति, मैं साथ ही रहूँगा।।

रन्छोर कुमार जैन (अणुव्रती)
2816 बैरागपुरा, मथुरा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

भजन

प्रभु तेरी पूजा, कर्म को नशाती।
ये भावों की पूजा, सभी दुःख भगाती।।

मैं चारो ही गतियों में, भ्रमता रहा हूँ।
बिना ज्ञान के मैं, भटकता रहा हूँ ।।

जबसे प्रभु तेरी, शरणा में आया।
ये कर्मों के बन्धन, कटने लगे हैं।।

तुम हो दयालू, तुम हो कृपालू।
लाखों को तारा, मुझको भी तारो।।

सोमा को तारा, अंजना को तारा।
मैना को तारा, सीता को तारा ।।

ब्रह्मा तुम्ही हो, विष्णु तुम्ही हो।
शंकर तुम्ही हो, राम तुम्ही हो ।।

जो जो तुम्हारी, शरण में है आया।
उसको प्रभु जी, है पार लगाया ।।

''रन्छोर'' भी तेरी, शरणा में आया।
तेरी पूजा करके, आनन्द को पाया।।

दोहा

सिद्धालय में बिराजते, सिद्ध अनन्तानन्त।
उन सबकी पूजा करूँ, पाऊँ परमानन्द ।।

रन्छोर कुमार जैन (अणुव्रती)
2816 बैराग पुरा, मथुरा